7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 यूपी के इस जिले में सिस्टम और तकनीक की खामी

5 तलवार से काटी बेटी की गर्दन

8 टीम इंडिया को लड़ना सिखाने वाले कप्तान सौरव गांगुली

UPHIN51019 | वर्षः 02, अंकः 29 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 13 जनवरी, 2025

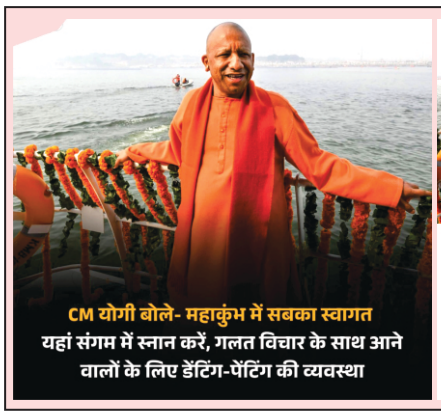

CM योगी बोले- महाकुंभ में सबका स्वागत

यहां संगम में स्नान करें, गलत विचार के साथ आने वालों के लिए डेंटिंग-पेंटिंग की व्यवस्था

योगी आदित्यनाथ

जिस किसी को भी भारत की सनातन परंपरा में विश्वास है, वह यहां आएं, उनका स्वागत है। गलत मानसिकता के साथ जो लोग यहां आएंगे उनकी डेंटिंग-पेंटिंग की भी व्यवस्था की गई है।

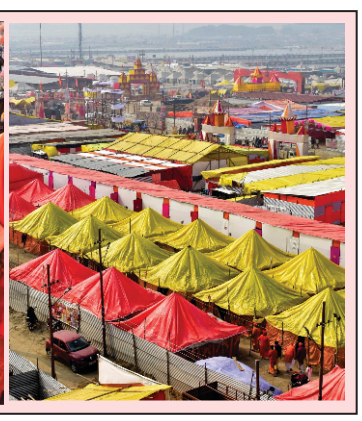

13 हजार फीट पर लहराया महाकुंभ ध्वज

प्रयागराज की बेटी ने बैंकॉक में बनाया कीर्तिमान, बोलीं- मेरा भारत महान

महाकुंभ में होंगे यूपी के दर्शन

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की तरफ से महाकुंभ मे तैयार प्रदर्शनी उत्तर प्रदेश दर्शन मंडपम

प्रयागराज। प्रयागराज में लग रहे महाकुंभ में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को पुण्य की डुबकी लगाने के साथ ही यूपी दर्शन का भी लाभ मिलेगा। यहां पर उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की तरफ से विशेष प्रकार की प्रदर्शनी बनायी गई हैं। जहां पर लोगों को यूपी के दर्शन होगे। इसमें यूपी सरकार की तरफ से बनाए गए सर्किट को प्रदर्शित किया गया है। जहां पर रामायण सर्किट, बृज सर्किट समेत अन्य शामिल हैं। इसके अलावा प्रदर्शनी में उत्तर प्रदेश का मॉडल तैयार किया गया है। जिसमें प्रदेश के प्रसिद्ध मंदिरों को वहीं दर्शाया गया है, जहां पर वह स्थापित हैं।

मंदिरों के स्ट्रक्चर के साथ मिलेगी उनकी जानकारी

पर्यटन विभाग की तरफ से एक पंडाल में तैयार कराए गए मंदिरों के स्ट्रक्चर को लोगों को देखने का मौका मिलेगा। इसमें वाराणसी का काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा कृष्ण मंदिर समेत अन्य कई मंदिर शामिल हैं। इनके साथ ही यहां ने वाले लोगों को इसकी खासियत भी ऑडियो और वीडियों के माध्यम से बतायी जाएगी। जो लोगों के लिए अलग अनुभव देगा। इसके अलावा प्रदेश के हस्तशिल्प कला को प्रदर्शित करने वाले विभिन्न सामानों के स्टॉल भी लगाए गए हैं।

महाकुंभ में कुछ इस तरह से आते हैं कल्पवासी

13 जनवरी से शुरू होगा कल्पवास, प्रतिदिन करेंगे गंगा स्नान, एक टाइम करते हैं भोजन

महाकुंभ के लिए देश भर से कल्पवासियों का आगमन शुरू हो चुका है। 13 जनवरी यानी पौष पूर्णिमा के दिन से कल्पवासियों का कल्पवास शुरू हो जाएगा जो एक महीने तक निरंतर चलता रहेगा। 12 फरवरी यानी माघी पूर्णिमा स्नान के बाद कल्पवास की अवधि खत्म होगी। इस अवधि में कल्पवासी पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में लीन रहेंगे।

संगम के तट पर कल्पवास करना बहुत पुण्य माना जाता है। वैसे तो यहां हर साल माघ मेले में कल्पवासी आते हैं लेकिन इस बार महाकुंभ में कल्पवास की महत्ता बढ़ जाती।

यहां जो लोग कल्पवास करते हैं वह सुबह ही उठकर गंगा स्नान कर दिन की शुरूआत करते हैं और इसके बाद अपने शिविर में पूजा पाठ और हवन जैसे धार्मिक कार्य करते रहते हैं। यह एक ही टाइम भोजन भी करते हैं।

देवकीनंदन ठाकुर ने बताए कल्पवास के मायने

विश्वविख्यात कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर बताते हैं कि "महाकुंभ केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह आत्मिक शुद्धता और समाज की सेवा का अवसर भी है।

कल्पवास के दौरान एक व्यक्ति अपनी आत्मा को शुद्ध करता है और धर्म के मार्ग पर चलने का संकल्प लेता है। इस बार महाकुंभ में लाखों कल्पवासी महाकुंभ में आ रहे हैं।"

12 वर्षों से कल्पवास करने आती हूं

वाराणसी की आशा अस्थाना कहती हैं कि हम लोग 12 वर्षों से संगम पर लगने वाले माघ मेले व कुंभ मेले में कल्पवास करने के लिए आते हैं। इस बार 144 वर्षों बाद ऐसा शुभ योग महाकुंभ में बन रहा है इसलिए हम लोग और उत्साहित हैं। इस महाकुंभ में साक्षी बनने का मौका मिल रहा है। मां गंगा की गोद एक महीने बीतेगा।

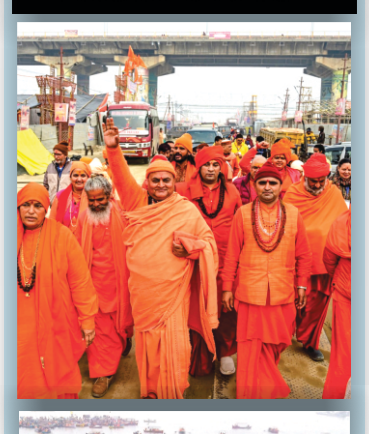

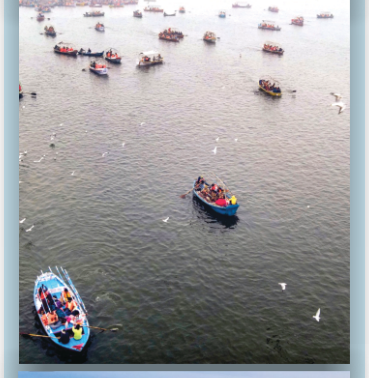

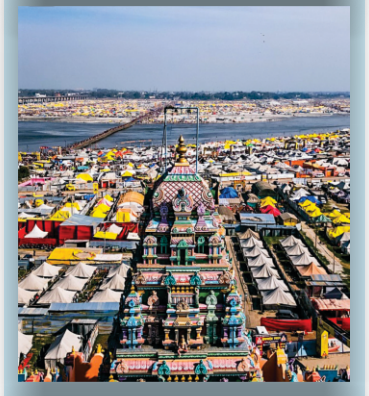

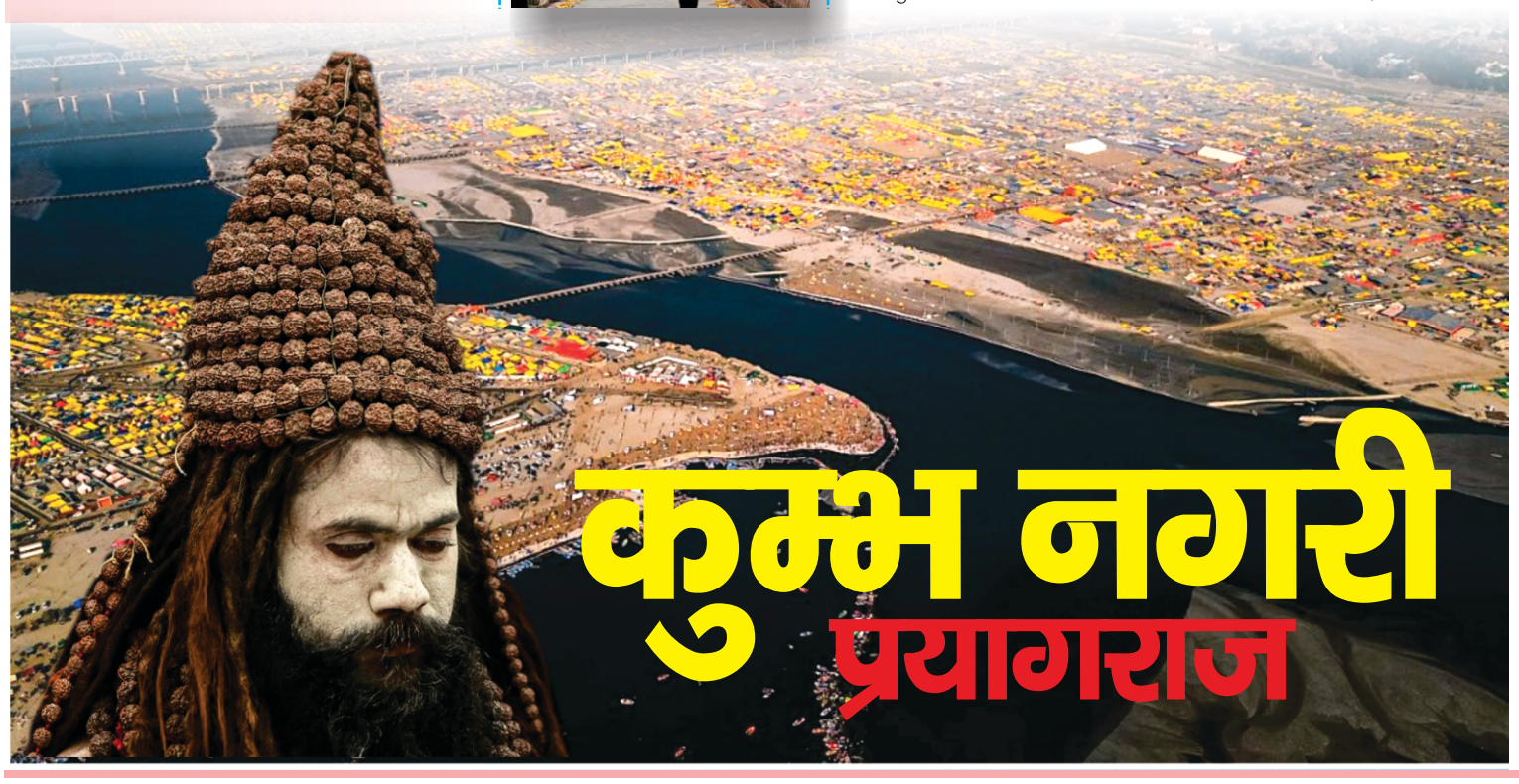

कुम्भ नगरी प्रयागराज

सम्पादकीय

व्यवस्था की संवेदनहीनता का परिचायक तिरुपति हादसा

आंध्रप्रदेश के विख्यात तिरुपति मंदिर में बुधवार रात मची भगदड़ में कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हुए हैं। भगदड़ का कारण वैकुंठ द्वार के दर्शन के लिए टोकन लेने की लंबी कतार थी, जिसमें कई घंटों के इंतजार के बाद श्रद्धालुओं के सब्र का बांध टूटा और हालात बेकाबू हो गए। तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम के मुताबिक 10 से 19 जनवरी तक वैकुंठ एकादशी पर वैकुंठ द्वार दर्शन के लिए खोले जाएंगे। इन 10 दिनों में करीब 7 लाख भक्तों के आने की संभावना है। दर्शन के लिए टोकन 9 जनवरी की सुबह 5 बजे से दिए जाने थे। लेकिन बुधवार 8 जनवरी की सुबह से ही टोकन पाने के लिए भक्तों की भीड़ जुटना शुरू हो गयी। टोकन वितरण के लिए कुल 9 केंद्रों में 54 काउन्टर बनाए गए थे। हरेक केंद्र पर भारी भीड़ इकठ्ठा हो रही थी। एक केंद्र में श्रद्धालुओं की कतार तितर बितर हुई तो अतिरिक्त पुलिस बल बुलाकर वहां स्थिति को काबू किया गया। ज्यादा भीड़ को देखते हुए पुलिस ने काउंटर खोले जाने तक लोगों को पास में बने एक पार्क में बैठने को कहा। कुछ ही देर में वो पार्क खचाखच भर गया। पुलिस ने पार्क का गेट बंद कर दिया। शाम 7 बजे के करीब पार्क में दम घुटने के चलते एक महिला बेसुध हो गई। इस महिला के इलाज के लिए उसे पार्क से बाहर निकालने का फैसला किया गया और एक पुलिस अधिकारी के कहने पर पार्क का गेट खोला गया, वहां मौजूद हजारों लोगों को लगा कि टोकन की कतार में भेजने के लिए पार्क का गेट खोला गया है और एक साथ सैकड़ों लोग पार्क के गेट से बाहर निकलने की जद्दोजहद करने लगे इसी दौरान वहां भगदड़ मच गई। जो कई लोगों की मौत का कारण बन गई। तिरुपति में हर वर्ष वैकुंठ एकादशी के अवसर पर ऐसी ही स्थिति होती है। लेकिन इस साल यह एक अनचाही आपदा में बदल गई। ऐसा नहीं है कि किसी धार्मिक स्थल पर भगदड़ की यह पहली घटना है। हिंदुस्तान हर वर्ष ऐसी कई अप्रिय घटनाओं का साक्षी बनता है। अभी पिछले महीने मथुरा में एक कथा आयोजन में भगदड़ हुई थी। इससे पहले जुलाई में हाथरस में नारायण हरि के सत्संग कार्यक्रम में भयंकर भगदड़ हुई थी, जिसमें कम से कम 120 लोगों की मौत हो गई थी। अगस्त में जहानाबाद के बाबा सिद्धनाथ मंदिर में मची भगदड़ में 7 लोगों की जान चली गई थी। तीन साल पहले जनवरी 2022 में वैष्णो देवी मंदिर में भारी भीड़ के कारण भगदड़ मची और 12 लोगों की मौत हो गई थी। जुलाई 2015 में आंध्रप्रदेश के राजमुंदरी में गोदावरी स्नान के दौरान मची भगदड़ में 27 तीर्थयात्रियों की जान चली गई थी। ऐसी घटनाओं की लंबी फेहरिस्त है। इन घटनाओं में समय, तारीख, स्थान बदले हैं, लेकिन एक बात जो नहीं बदलती कि इन घटनाओं के असल दोषियों को कभी सजा नहीं मिलती, कभी किसी की जिम्मेदारी तय नहीं होती। हालांकि हर घटना के बाद जांच का वादा सरकार करती है।

> **आंध्रप्रदेश के विख्यात तिरुपति मंदिर में बुधवार रात मची भगदड़ में कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हुए हैं**

दूसरी बात जो नहीं बदलती कि मरने वाले तमाम श्रद्धालु बेहद सामान्य परिवारों के लोग रहते हैं, इनमें किसी अतिविशिष्ट व्यक्ति का नाम शुमार नहीं होता। अकाल मौत किसी को भी नहीं मिलनी चाहिए, न आम को, न खास को। लेकिन भारत में आम जनता को अकाल मृत्यु के खौफ से निजात नहीं है, खास कर तब जबकि वह आस्तिक हो और अपनी श्रद्धा के मुताबिक धर्मस्थलों में जाए। यूं तो धार्मिक स्थलों में हमेशा ही भीड़ उमड़ती है लेकिन कुछ खास मौकों पर, कुछ खास धार्मिक स्थलों में इतने लोग एक वक्त में इकट्ठे हो जाते हैं कि प्रशासन, प्रबंधन के लिए उन्हें संभालना मुश्किल हो जाता है। तमाम असुविधाओं के बावजूद श्रद्धालु अपनी मन्नत पूरी करने, अपनी तकलीफों से राहत की प्रार्थना करने या अपना इहलोक, परलोक सुधारने के लिए धार्मिक स्थलों में, प्रवचन और सत्संगों में पहुंचते हैं। अतिविशिष्ट लोगों को इस असुविधा का सामना कभी–कभार ही करना पड़ता है। क्योंकि उनके लिए विशिष्ट दर्शन, विशिष्ट कीमत पर उपलब्ध होते हैं और उनकी मौजूदगी अन्य लोगों को उस स्थान पर आने के लिए लुभाती भी है।

जिस तिरुपति मंदिर में अभी भगदड़ हुई, वहां कुछ दिनों पहले ही अभिनेत्री जाह्नवी कपूर गई थीं और उनकी तस्वीरें तमाम तरह के मीडिया में दिखाई गई। यह कोई अकेला उदाहरण नहीं है। तिरुपति, वैष्णो देवी, कामाख्या मंदिर, देवघर स्थान, अजमेर शरीफ ऐसे तमाम धर्मालयों में देश भर के विशिष्ट लोग पहुंचते हैं, जहां उनके लिए विशिष्ट सुविधाएं होती हैं, उन्हें न धक्का–मुक्की से गुजरना पड़ता है, न दर्शन या प्रसाद के लिए लंबी लाइनों में घंटों खड़े रहना पड़ता है।

भगवान के दर पर सभी एक समान है, इस वाक्य को देश की वीआईपी संस्कृति पूरी तरह गलत साबित करती है। विशिष्ट लोगों को भी भगवान के आशीर्वाद की जरूरत है, इसमें कोई हर्ज नहीं है। लेकिन क्या यह जरूरी है कि उनके लिए एक नियम और आम जनता के लिए दूसरे नियम रहें। क्या भगवान और भक्त के बीच आर्थिक ओहदा मायने रखना चाहिए।

ऐसा नहीं है कि पहले दिग्गज हस्तियां धार्मिक स्थानों पर नहीं जाती थीं, लेकिन तब इतना प्रचार–प्रसार नहीं होता था। अब तो आलम यह है कि हर दिन कोई मुख्यमंत्री, कोई नेता, कोई खिलाड़ी, कोई अभिनेता किसी न किसी मंदिर में पूजा–पाठ करने पहुंचता है। उनके पीछे–पीछे मीडिया पहुंचता है कि फलाने ने आज यहां दर्शन किए और लोगों की सुख–समृद्धि की कामना की। जबकि लोगों का जीवन सरकारों की ईमानदार कोशिशों से सुधर सकता है, देश को इसी की अधिक जरूरत है। लेकिन इस समय सरकारों का ध्यान भी धार्मिक कामों को बढ़ावा देने में लगा है।

पिछले साल इन्हीं दिनों में मीडिया में राम मंदिर के उद्घाटन की तैयारियों और जजमान बने प्रधानमंत्री मोदी के उपवास की सुर्खियां बनी हुई थीं और इस साल प्रयागराज में हो रहे महाकुंभ की तैयारियों का शोर है। कितने करोड़ के विलासितापूर्ण शिविर बनाए जा रहे हैं, खान–पान की क्या तैयारी है, स्वास्थ्य सुविधाओं की क्या व्यवस्था है, ऐसी ही खबरें लगातार आ रही हैं। महाकुंभ के आयोजन में सरकार जितनी दिलचस्पी ले रही है, उतनी ही दिलचस्पी और लगन से अगर लोककल्याण कार्यों के दायित्व को निभाया जाए तो अमृत की बूंदों पर विशिष्ट लोगों तक नहीं, हर वर्ग तक पहुंचेंगी। रहा सवाल तिरुपति हादसे का, तो मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने अस्पताल जाकर घायलों के हाल–चाल लिए हैं, प्रधानमंत्री से लेकर तमाम नेताओं की संवेदनाएं आ चुकी हैं, सरकार ने मुआवजे का ऐलान भी कर दिया है। इससे अधिक राहत या इंसाफ की अपेक्षा मौजूदा निजाम से नहीं की जा सकती।

तब कोई नक्सलवाद नहीं बचेगा

आम तौर से खबरों से दूर रहने वाले छत्तीसगढ़ से आजकल दो तरह की खबरें आ रही हैं जो राष्ट्रव्यापी चर्चा में दिल्ली और बिहार की चुनावी चकल्लस वाली खबरों पर भारी पड़ रही हैं

अगर हम सरकार और नक्सलियों की ताकत पर नजर डालें तो यह कोई लड़ाई ही नहीं होनी चाहिए और ऐसा मुकाबला होने का दौर कब का समाप्त हों जाना चाहिए था। लेकिन बस्तर ही नहीं. देश के काफी सारे इलाकों में नक्सलियों की मौजूदगी और नेपाल से लेकर महाराष्ट्र तक के जंगल जैसे इलाकों(दंडकारण्य) को लेकर एक रेड कारीडोर बनाने का सपना पूरा करने की जिद अगर अभी भी जारी है। आम तौर से खबरों से दूर रहने वाले छत्तीसगढ़ से आजकल दो तरह की खबरें आ रही हैं जो राष्ट्रव्यापी चर्चा में दिल्ली और बिहार की चुनावी चकल्लस वाली खबरों पर भारी पड़ रही हैं। युवा और जुनूनी पत्रकार मुकेश चंद्राकर की सरकारी दुलारे ठेकेदार सुरेश चंद्राकर और उसके लोगों द्वारा हत्या कराने का मामला अगर सबको झकझोर रहा है और शासन(जिसके समर्थन के बगैर सुरेश न तो इतना बड़ा बनाता और न ऐसा दुस्साहस करता) को भी सक्रिय होने के लिए मजबूर कर रहा है, तो बस्तर में छिड़ी सुरक्षा बलों और नक्सलियों की लड़ाई ने दर्जनों जानें ले ली हैं। अब नक्सलियों की तरफ से तो जवाबी कार्रवाई होने पर ही उनकी तैयारी और मंशा की खबर आती है लेकिन शासन की तरफ से केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और प्रदेश सरकार के काफी सारे लोग तथा नेता इस बार की लड़ाई में नक्सलवाद की सफाई का संकल्प दोहरा चुके हैं।

बीजापुर में बारूदी सुरंगों में विस्फोट कराके नक्सलियों ने स्थानीय स्तर पर तैयार दो बालों के आठ लोगों को मार दिया तब अमित शाह ने कहा हम बस्तर से नक्सलवाद समाप्त करके रहेंगे। कुछ समय पहले उन्होंने कहा था कि हम 2026 तक पूरे देश से नक्सलवाद मिटा देंगे। बस्तर में भी अबूझमाद के एक हिस्से को छोड़कर बाकी सभी जगह नकसलियों से जुड़ा सर्वे चल रहा है और अभी के जारी टकराव में सुरक्षा बालों ने नक्सलियों का काफी नुकसान किया था। रविवार को ही तीन दिन की भिड़ंत के बाद पांच नक्सली मारे गए थे जबकि सुरक्षा बालों का एक जवान भी शहीद हुआ था। सोमवार की बीजापुर की घटना उसका जवाब थी। गृह मंत्री के संकल्प को ठीक और जरूरी मानना चाहिए क्योंकि देश के अंदर किसी भी गैर सरकारी संगठन या व्यक्ति की हैसियत कानून और संविधान से ऊपर नहीं हो सकती। और जिस ताकत की भी जरूरत हो शासन को उसका इस्तेमाल करके ऐसी गैर संवैधानिक सत्ता को समाप्त करना चाहिए। अमित शाह लंबे समय से सरकार में हैं और उनके कार्यकाल तथा भाजपा के कुल कार्यकाल को देखें तो इस मामले में उनकी उपलब्धियां और दावों में अंतर दिखेगा। पिछले साल से बस्तर में निश्चित रूप से सरकारी प्रयास बढ़े हैं। स्थानीय लोगों को लेकर फौज बनाना और उनको सामने करके एक्शन लेना अभी तक प्रभावी रहा है और पिछले साल में 287 नक्सली मारे जा चुके हैं। दूसरी ओर सुरक्षा बलों को कम नुकसान हुआ है(92 जवान मारे गए हैं) तो सिविलियन कैजुआल्टी (241 मौत) बढ़ी है। इसका बढ़ना बताता है कि नक्सलियों में बौखलाहट बढ़ी है और वे निहत्थे लोगों पर अपना निशाना बना रहे हैं। दिलचस्प तथ्य यह है कि अबूझमाड़ के पास की यह घटना बारूदी सुरंगों में विस्फोट कराके अंजाम दी गई जो नक्सलियों का पुराना तरीका रहा है। अगर हम सरकार और नक्सलियों की ताकत पर नजर डालें तो यह कोई लड़ाई ही नहीं होनी चाहिए और ऐसा मुकाबला होने का दौर कब का समाप्त हों जाना चाहिए था। लेकिन बस्तर ही नहीं. देश के काफी सारे इलाकों में नक्सलियों की मौजूदगी और नेपाल से लेकर महाराष्ट्र तक के जंगल जैसे इलाकों(दंडकारण्य) को लेकर एक रेड कारीडोर बनाने का सपना पूरा करने की जिद अगर अभी भी जारी है तो इसके पीछे नक्सलवाद का राजनैतिक दर्शन जितना बड़ा कारण नहीं है उससे बड़ा कारण इन इलाकों का पिछड़ा होना है। बेरोजगारी बहुत है और आर्थिक पिछड़ापन जीवन को नरक बनाता है। फिर अगर सरकार फौज बनाती है तब और नक्सली फौज बनाते हैं तो नौजवानों की कमी नहीं रहती। मरने वाले दोनों तरफ के लोग यही बनाते हैं। सरकार की राष्ट्रभक्ति के पाठ में भी दम होता है तो नक्सली वर्ग संघर्ष और क्रांति के सपने का भी अपना नशा होता है और फिर हाथ में हथियार हो और चलाने की आजादी हो तो खुद को बादशाह समझना आसान बन जाता है। इस आधार पर इसे सिर्फ लॉ एंड आर्डर की समस्या मानना भी गलत होगा और मौजूदा नीति का यह दोष है कि इसमें डायलाग वाली जगह रखी ही नहीं गई है। ग्यारह साल के मोदी राज या उससे पहले के मनमोहन राज को देखें तो देश में नक्सली समस्या काफी काम हुई है। झारखंड, बिहार, महाराष्ट्र, ऑडिशा, बंगाल, आंध्र के ज्यादातर नक्सली इलाके आज शांत हो चुके हैं। बस्तर छोड़कर कहीं–कहीं उनका असर है। और यह समेटना सरकारी प्रयास के साथ संवाद या चुनावी लोकतंत्र में बढ़ती आस्था के साथ जुड़ा है। जब समस्याओं का निपटारा शांतिपूर्ण ढंग से हो जाए तो जान जोखिम में डालने की जरूरत नहीं लगती। दूसरी ओर नेपाल के प्रचंड से लेकर देश के नक्सली नेताओं का आचरण भी ऐसा हुआ है कि सामान्य बुद्धि वाले नौजवान को झूठा स्वर्ग दिखाना संभव नहीं रहा है। नक्सल आंदोलन की अपनी कमजोरियां भी साफ दिखी हैं। हिंसा के अलावा बहुत कुछ ऐसा है जिसे समझना किसी नौजवान के लिए संभव है–जैसे बड़े व्यावसायिक घरानों से याराना और पैसा वसूली। कहीं भी आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्था पर चोट न करके पुराने सत्ता प्रतीकों(जिसमें बड़ी जाति और जमींदारी शामिल है) को निशाना बनाना सवाल पैदा करता है कि गरीबी, बदहाली, पिछड़ेपन और अशिक्षा के लिए आज मुख्य दोषी कौन है। तब बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां और सरकारों में बैठे उनके एजेंट ज्यादा दोषी दिखेंगे। कायदे से सैनिक कार्रवाई या सख्ती के साथ शिक्षा और संवाद का कार्यक्रम भी चलना चाहिए, भटके नौजवानों की वापसी और पुनर्वास का काम भी होना चाहिए। यह याद रखना होगा कि नक्सली नेताओं में सिफ प्रचंड जैसे लोग ही नहीं हुए हैं(जो सत्ता पाते ही बदल जाए) बल्कि त्याग तपस्या वाले भी है। वे वैचारिक रूप से भटके हो सकते हैं, हिंसा के सहारे राजनैतिक–सामाजिक बदलाव का भ्रम पाले हो सकते हैं पर उनका निजी आचरण और जीवन काफी लोगों को प्रेरक भी लगा सकता है और सबसे बढ़ाकर जिन स्थितियों में नक्सलवाद जन्म लेता और पनपता है, जमीन बनाता है उसको भी समाप्त करना लक्ष्य होना चाहिए। आजादी के पचहत्तर साल बाद भी बस्तर, पलामू, कालाहांडी और गढ़चिरौली जैसे पिछड़े ठिकाने होना देश के कथित विकास और भारत के विश्व शक्ति बन जाने का मुंह ही चिढ़ाते हैं। उन पर शर्म करना भी हमें और गृह मंत्री को सीखना होगा। जैसे ही इन सब मोर्चों पर फौजी मुहिम जैसी तत्परता दिखेगी, कोई नक्सलवाद नहीं बचेगा।

नफरत की इंतिहां –कहां गई शीर्ष नेताओं की नसीहतें

एक और पहलू को समझने की जरूरत है। जब इस तरह की सोच को राजनैतिक लाभ के लिए बढ़ावा दिया जाता है और इससे चुनावों में फायदा होता है तो शुरुआत में तो नेताओं को खुशी होती है। मगर फिर, जो बीज नेताओं ने बोये होते हैं, उनसे कई नए तत्व ऊग आते हैं और जैसा कि भागवत ने कहा, उनमें से कुछ राजनैतिक पद और प्रभाव हासिल करने की जद्दोजहद में जुट जाते हैं। अपने गठन के बाद से ही आरएसएस ऐसी अनेक संस्थाओं का निर्माण करता आया है जो हिंदुत्व या हिन्दू राष्ट्रवाद की उसकी विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम करती हैं। हिंदुत्व की अवधारणा आर्य नस्ल, ब्राह्मणवादी मूल्यों और सिन्धु नदी से लेकर समुद्र तक की भूमि के आर्यावर्त होने पर आधारित है। आरएसएस ने जिन संगठनों और संस्थाओं को जन्म दिया है, उनकी संख्या 100 से ज्यादा है। इसके अलावा अनेक ऐसे संगठन हैं जो भले ही औपचारिक रूप से संघ परिवार के सदस्य न हों, मगर वे उसकी विचारधारा में रचे–बसे हैं. इनमें साधु–संतों के अनेक संगठनों व गौरक्षकों के समूहों सहित ऐसे अनेक गिरोह शामिल हैं जो हिन्दू धर्म के नाम पर हिंसा करने के मौकों की तलाश में रहते हैं। अब ऐसे कई संगठन अस्तित्व में आ चुके हैं जो अत्यंत आक्रामक हैं और जो आरएसएस द्वारा उसके अनुयायियों के लिए निर्धारित लक्ष्मणरेखा को पार करने में तनिक भी संकोच नहीं करते।

गौरक्षकों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि–गाय के नाम पर मनुष्यों की हत्या स्वीकार्य नहीं है। उनके इस वक्तव्य के कुछ ही घंटे बाद, इसी मुद्दे पर एक मुसलमान को मौत की घाट उतार दिया गया। इसी तर्ज पर, प्रधानमंत्री ने क्रिसमस की पूर्वसंध्या पर कहा कि श्प्रेम, सौहार्द्र और भाईचारा, ईसा मसीह के शिक्षाओं का केन्द्रीय तत्व हैं। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे इन मूल्यों को मजबूती दें। इसके कुछ ही दिन बाद, बजरंग दल के सदस्यों और हिन्दू धर्म के अन्य स्व–नियुक्त ठेकेदारों ने अहमदाबाद में सांता क्लॉज के भेष में उपहार बांट रहे एक व्यक्ति पर हमला किया। सोशल मीडिया पर वायरल एक वीडियो में दिखाया गया है कि अहमदाबाद के कांकरिया कार्निवल में सांता क्लॉज की वेशभूषा पहने दो लोगों की गुंडों ने जबरदस्त पिटाई की. यह शायद पहली बार है कि सांता क्लॉज का भेष धरे लोगों पर हमले हो रहे हैं। इसके पहले कैरोल गायकों पर हमले हो चुके हैं। भाजपा के सत्ता में आने के बाद से राष्ट्रपति भवन में कैरोल गायन की परंपरा बंद कर दी गई है। बजरंग दल हिन्दुओं को क्रिसमस पार्टियों में भाग न लेने की चेतावनियां जारी कर चुका है। इस बार क्रिसमस पर ये सब हरकतें कुछ कम क्यों हुईं? हाल में हमने हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजने के अभियान का आगाज भी देखा है, जो बाबरी मस्जिद को ढहाए जाने की याद दिलाता है। इस तरह के काल्पनिक दावों के ज्वार के बाद आरएसएस के मुखिया मोहन भागवत ने भी कहा कि–हमें हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग खोजने के प्रयास बंद करने चाहिए। यह सचमुच आश्चर्यजनक है कि काशी में फव्वारे–जैसे एक ढांचे को शिवलिंग बताया जा रहा है और मस्जिद को मंदिर में बदलने की मांग हो रही है। उत्तरप्रदेश के संभल में ऐसे ही दावों के बाद हिंसा हो चुकी है।शायद इस सबने देश की सबसे बड़ी राजनैतिक संस्था के शीर्ष नेता को झकझोर दिया है या फिर शायद उन्हें यह लग रहा है कि इससे संघ परिवार की छवि खराब होगी। इसलिए उन्होंने एक ऐसा आह्वान किया जो समझदारीपूर्ण लगता है। उन्होंने कहा कि–श्अयोध्या के राममंदिर का सम्बन्ध आस्था से था और हिन्दू इस मंदिर का निर्माण चाहते थे. मगर सिर्फनफरत के कारण नए स्थानों के बारे में विवाद खड़े करना अस्वीकार्य है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि कुछ लोग समझते हैं कि नए विवाद खड़े कर वे हिन्दुओं के नेता बन सकते हैं। इसकी इजाजत कैसे दी जा सकती है।

इसके बाद एक चमत्कार हुआ। हिंदुत्व की राजनीति से जुड़े कई संगठनों ने भागवत की इस समझाईश का विरोध किया। हम सब जानते हैं कि आरएसएस में सख्त अनुशासन होता है और उसके सदस्य कभी अपने शीर्ष नेता के आदेशों का उल्लंघन नहीं करते तो फिर यह कैसे हो रहा है कि दर्जनों सेनाएं और धर्म संसदें भागवत की अपील के खिलाफ बात और काम कर रही हैं?

इससे भी बड़ी बात यह है कि आरएसएस के अनाधिकारिक मुखपत्र आर्गेनाइजर ने भी अतिवादियों की मांग का समर्थन करते हुए लिखा कि, मंदिरों की पुनर्स्थापना, हमारी पहचान की खोज है। (द टाइम्स ऑफ इंडिया, दिसम्बर 27, 2024). उसने यह भी लिखा कि मंदिरों की पुनर्स्थापना का उद्देश्य हमारी राष्ट्रीय पहचान स्थापित करना और सभ्यतागत न्याय हासिल करना है।

क्या नफरत सचमुच इतनी गहरी है कि अनुयायी अपने नेताओं की बात भी नहीं सुन रहे हैं? या क्या नरेन्द्र मोदी जैसे नेता चाहते हैं कि नफरत भड़काने वाली हरकतें होती रहें क्योंकि इनसे उनकी राजनीति को मजबूती मिलती है? अगर ऐसा नहीं है तो हिंसा करने वालों के खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं होती? क्या कारण है कि कानून और व्यवस्था बनाये रखने वाली मशीनरी से लेकर कुछ हद तक न्यायपालिका तक का उन तत्वों के प्रति नर्म रुख है जो नफरत फैलाते हैं और हिंसा करते हैं?

बाबरी मस्जिद को जमीदोज करने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई। गाय और गौमांस के नाम पर लिंचिंग करने वाले खुले घूम रहे हैं। लव–जिहाद के नाम पर हत्याएं और हमले करने वालों का बाल भी बांका नहीं हुआ है। जाहिर है कि ऐसे तत्वों को यह पता है कि वे आसानी से कानून तोड़ सकते हैं। वे जानते हैं कि कानून को तोड़मरोड़ कर उनका बचाव किया जाएगा।

आर्गेनाइजर द्वारा भागवत का विरोध मन में एक जिज्ञासा पैदा करता है। क्या आरएसएस विभाजित हो गया है? यह कैसे हो रहा है कि भागवत शांति और सौहार्द्र की बात कर रहे हैं और आर्गेनाइजर के कर्ताधर्ता चाहते हैं कि नफरत और हिंसा की राह पर तेजी से आगे बढ़ा जाए?

एक और पहलू को समझने की जरूरत है। जब इस तरह की सोच को राजनैतिक लाभ के लिए बढ़ावा दिया जाता है और इससे चुनावों में फायदा होता है तो शुरुआत में तो नेताओं को खुशी होती है। मगर फिर, जो बीज नेताओं ने बोये होते हैं, उनसे कई नए तत्व ऊग आते हैं और जैसा कि भागवत ने कहा, उनमें से कुछ राजनैतिक पद और प्रभाव हासिल करने की जद्दोजहद में जुट जाते हैं। हम सबको याद है कि जिस समय बाबरी मस्जिद गिराई जा रही थी, वरिष्ठ आरएसएस नेता के. सुदर्शन, जो आगे चल कर आरएसएस के मुखिया बने, मंच पर थे। इस अपराध की किसी को कोई सजा नहीं मिली। बाबरी मस्जिद के ढहाने वालों को निरपराध घोषित कर दिया गया और यह फैसला देने वाले जज को रिटायरमेंट के बाद एक महत्वपूर्ण पद मिला। एक पुरानी कहावत है कि श्जैसे बोओगे, वैसा काटोगे।श बाबरी मस्जिद की पूरी कथा से यह साफ है कि मंदिरों को तोड़ने के झूठे नैरेटिव फैलाने के अलावा, मुसलमानों के बारे में अनेक मिथक भी फैलाए गए, नतीजा हम सबके सामने है। आरएसएस के मुखिया की बात अब उनके ही समर्थक और अनुयायी सुनने को तैयार नहीं हैं। इसके अलावा, ईसाईयों के बारे में भी दर्शकों से यह प्रचार किया जा रहा है कि वे जोर–जबरदस्ती, धोखेबाजी और लोभ–लालच के जरिये धर्मपरिवर्तन करवा रहे हैं।

बस्ती में हत्याकर जलाया गया शव

कमरे में जल रही थीं लकड़ियां... पास में पड़ी थी पिता की चप्पल, बेटी की आपबीती

गोरखपुर। बेटी रिमझिम पिता को बुलाने के लिए गई थी। वहां उसकी नजर एक कमरे में जल रही लकड़ियों पर पड़ी और पास में पिता की चप्पल देख चिल्लाते हुए घर पहुंची और सारी बात बताई। यूपी के बस्ती जिले के वाल्टरगंज थाना क्षेत्र के धौरहरा गांव में निजी इंटर कॉलेज के प्रबंधक की बृहस्पतिवार सुबह हत्या कर शव को उसके ही बंद पड़े स्कूल में जला दिया गया। मृतक की पत्नी की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात पर हत्या का केस दर्ज कर एक संदिग्ध को हिरासत में लिया है। जानकारी के मुताबिक, धौरहरा निवासी जामवंत शर्मा (45) पुत्र लाल बिहारी परसा सूरत गांव में शिक्षामित्र था। उसने गांव में ही करीब 15 वर्ष पहले श्रीमती प्रयागराजी इंटर कॉलेज शुरू किया था। अक्तूबर 2014 में एक हत्याकांड में जेल भेजे जाने की वजह से कॉलेज बंद हो गया था। जमानत पर छूटने के बाद कॉलेज का संचालन फिर शुरू हुआ। मगर, अप्रैल 2024 से कॉलेज फिर किन्हीं कारणों से बंद हो गया। इसके बाद जामवंत ने कॉलेज में ही शटरिंग का व्यवसाय शुरू कर दिया।

जामवंत की पत्नी महिमा के मुताबिक बृहस्पतिवार सुबह करीब पांच बजे वह टहलने निकले थे। 7:30 बजे तक घर नहीं लौटे तो छोटी बेटी रिमझिम उन्हें बुलाने कॉलेज पर पहुंची। वहां उसकी नजर एक कमरे में जल रही लकड़ियों पर पड़ी और पास में पिता की चप्पल देख चिल्लाते हुए घर पहुंची और सारी बात बताई। परिजन और ग्रामीण वहां पहुंचे और आग बुझाई तो उसमें एक लाश मिली। कराब 85 फीसदी जल चुकी लाश की शिनाख्त परिजनों ने जामवंत के रूप में की।

पुलिस को शव जामवंत का होने पर संदेह, डीएनए जांच कराएगी

उधर, पुलिस को जलता मिला शव जामवंत का होने को लेकर संदेह है। एसओ उमाशंकर तिवारी का कहना है कि इसकी पुष्टि के लिए राख और हड्डियों को डीएनए जांच के लिए भेजेंगे। फिलहाल जामवंत की पत्नी की तहरीर पर अज्ञात पर हत्या का केस दर्ज कर लिया गया है।

बेतिया राज संपत्ति सड़क की ओर निर्माण का फिर हुआ विरोध

संवाददाता, गोरखपुर। बेतियाहाता में बेतिया राज की संपत्ति को सुरक्षित करने के लिए बनाई जा रही चहारदीवारी के निर्माण को लेकर स्थानीय लोगों ने फिर विरोध दर्ज कराया।

लोगों की शिकायत पर पहुंचे वार्ड के पार्षद विश्वजीत त्रिपाठी ने भी बिहार सरकार के अधिकारियों से आपत्ति दर्ज कराने के साथ ही जिला प्रशासन नगर निगम के अधिकारियों से मामले की शिकायत की। बेतियाहाता में बेतिया राज का लगभग 1500 वर्ग मीटर में जर्जर हो चुका खपरैल बंगला है। बिहार राजस्व परिषद की ओर से बेतिया राज की संपत्ति की निगरानी के लिए राजस्व पदाधिकारी बद्री प्रसाद गुप्ता के नेतृत्व में तैनात की गई टीम इसे दस दिनों से सुरक्षित करने में जुटी है।

कुछ दिन पहले भी टीम चहारदीवारी का निर्माण करा रही थी। आरोप है कि टीम, सड़क की ओर करीब नौ इंच बढ़कर पाइलिंग करा रहा थी, जिसपर बेतियाहाता के पार्षद विश्वजीत त्रिपाठी ने उस तरफ निर्माण बंद करा दिया था। लेकिन, बाकी हिस्से में निर्माण जारी था।

गुरुवार को फिर टीम सड़क की ओर निर्माण करा रही थी जिसपर स्थानीय लोगों ने विरोध करने के साथ ही पार्षद को भी जानकारी दी। मौके पर पहुंचे पार्षद ने आपत्ति दर्ज कराई, जिसके बाद फिर उस हिस्से में काम बंद हो गया।

पार्षद का कहना है कि सड़क सार्वजनिक है। पहले ही इसकी चौड़ाई महज फीट है। ऐसे में टीम की ओर से नौ इंच और आगे बढ़कर निर्माण कराने से चौड़ाई और घट जाएगी, जिससे आवागमन प्रभावित होगा। उधर राजस्व पदाधिकारी का कहना है कि बेतिया राज की संपत्ति पर चहारदीवारी का निर्माण कराया जा रहा है, जिसे पार्षद समेत अन्य स्थानीय लोग प्रभावित कर रहे हैं।

जन्मभूमि पर बनेगा भव्य योग भवन, संजोई जाएंगी परमहंस योगानंद की यादें

31 करोड़ की लागत से बनेगा चार तल का योग भवन जमीन अधिग्रहण के बाद निर्माण शुरू कराने की तैयारी

गोरखपुर। पूरी दुनिया को योग का पाठ पढ़ाने वाले परमहंस योगानंद की जन्मस्थली पर उनकी बचपन की यादें संजोने की तैयारी पूरी हो चुकी है। कोतवाली से सटे एक संकरी गली में उनके जन्मस्थान की भूमि का अधिग्रहण कर लिया गया है। वहां योग भवन के निर्माण का खाका तैयार हो चुका है। भूमि तल सहित चार तल के भवन के निर्माण के लिए 31 करोड़ रुपये की स्वीकृति भी शासन से प्राप्त हो गई है। फरवरी के पहले सप्ताह से निर्माण कार्य शुरू करा देने की पर्यटन विभाग की तैयारी है।

भवन के निर्माण की कार्ययोजना के मुताबिक जन्मस्थली पर बनाए जाने वाले चार मंजिला भवन की हर मंजिल पर अलग–अलग तरीके से योगानंद की यादें संजोयी जाएंगी। भूमि तल के बाहर हिस्से एक लान विकसित किया जाएगा, जिसमें योगानंद की भव्य प्रतिमा स्थापित की जाएगी। पहले तल पर एक संग्रहालय और पुस्तकालय बनाया जाएगा, जिसमें योगानंद के अलग–अलग मुद्रा में चित्रों को अवलोकनार्थ सजाया जाएगा। उनसे जुड़े बहुमूल्य सामानों का भी प्रदर्शन किया जाएगा।

दूसरा तल आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा। इसमें उस स्थान को मंदिर का स्वरूप दिया जाएगा, जहां आज से आज से 131 वर्ष पहले पांच जनवरी को क्रिया योग के प्रणेता योगानंद जी का जन्म हुआ था।

मंदिर के सामने केंद्र का दूसरा योग सेंटर बनाया जाएगा, जिसमें बैठकर योगानंद की शिष्य परंपरा के लोग योग व ध्यान कर सकेंगे। तीसरे और अंतिम तल पर दो हाल बनाए जाएंगे, जिसमें योगाभ्यास करने का इंतजाम रहेगा। ध्यान के लिए अगल से स्थान निर्धारित रहेगा। योग भवन का निर्माण 1360 वर्गमीटर में कराए जाना है। निर्धारित जमीन के अधिग्रहण में कुछ 19 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। मानक पर स्मृति भवन निर्माण के लिए कुछ जमीन प्रशासन ने निश्शुल्क उपलब्ध कराई है।

ऐसे बनी योग भवन के निर्माण की भूमिका

विदेश में परमहंस योगानंद के शिष्य व भक्त बड़ी संख्या में हैं। जन्मस्थली होने की वजह से बहुत से समय–समय पर गोरखपुर भी आते थे लेकिन यहां उनकी जन्मस्थली पर किसी तरह की विशेष व्यवस्था न देख दुखी हो जाते थे और इसे अध्यात्म केंद्र के रूप में विकसित करने का अनुरोध करते थे।

उनकी मांग विभिन्न माध्यमों मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तक पहुंची तो उन्होंने इसे गंभीरता लेते हुए योगानंद की जन्मस्थली को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने का न केवल निर्णय ले लिया बल्कि इसकी जिम्मेदारी पर्यटन विभाग को सौंप दी।

पर्यटन विभाग ने मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में जन्मस्थली पर योग भवन बनाने की कार्ययोजना तैयार ली, जो जल्द धरातल पर दिखेगी।

10 गुणा हो जाएगी जिले के विदेशी पर्यटकों की संख्या

पर्यटन विभाग इस योजना को लेकर काफी उत्साहित है क्योंकि इसके जरिये जिले के विदेशी पर्यटकों की संख्या में तेजी से बढ़ेगी। विभाग को इसके 10 गुणा हो जाने की उम्मीद है। विभाग के अनुसार, अभी तक वर्ष में अधिकतम हजार से पंद्रह सौ विदेशी पर्यटक ही गोरखपुर आते हैं। योगानंद की जन्मस्थली पर अध्यात्म केंद्र बन जाने से दुनिया भर में फैले उनके शिष्यों व भक्तों को एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल मिल जाएगा। ऐसे में यहां आना–जाना बढ़ जायेगा। उप निदेशक विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़कर 10 से 15 हजार पहुंच जाने की उम्मीद जता रहे हैं।

भाजपा संगठनात्मक चुनाव–गोरखपुर में जिलाध्यक्ष के 30 दावेदार

उपाध्यक्ष व महामंत्री सहित दर्जन भर वर्तमान पदाधिकारियों ने भी भरा पर्चा

दो मंडल अध्यक्षों ने भी भरा पर्चा, चार महिलाओं ने भी की दावेदारी

संवाददाता, गोरखपुर। भाजपा में इस बार जिलाध्यक्ष बनने के लिए मुकाबला कड़ा है। इस पद के लिए पांच–दस नहीं 30 दावेदारों ने पर्चा भरा है। वर्तमान जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह भी एक बार फिर दावेदार हैं। उनके अलावा 12 और जिला पदाधिकारी भी इस पद के उम्मीदवार हैं। दो मंडल अध्यक्षों ने भी जिलाध्यक्ष पद के लिए अपना दावा ठोंका है। पार्टी के प्रति अपनी निष्ठा का दांव चला है। दावेदारों में चार महिलाएं भी शामिल हैं। इनमें एक वर्तमान उपाध्यक्ष भी हैं।

रानीडीहा क्षेत्रीय कार्यालय में गुरुवार को जिलाध्यक्ष पद के लिए नामांकन प्रक्रिया शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुई। जिला निर्वाचन अधिकारी केदार नाथ सिंह ने बताया कि बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने इस पद के लिए दावेदारी की है। मुकाबला कड़ा है क्योंकि 12 जिला पदाधिकारी अध्यक्ष पद के लिए नामांकन किया है।

नामांकन करने वालों में जिलाध्यक्ष, जिला उपाध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री और कोषाध्यक्ष तक शामिल हैं। छह उपाध्यक्ष, दो महामंत्री, दो मंत्री व एक कोषाध्यक्ष ने पर्चा भरा है। कई पूर्व पदाधिकारियों के नाम भी जिलाध्यक्ष पद के लिए सामने आए हैं। इनमें से तीन नाम का पैनल प्रदेश नेतृत्व को भेजा जाएगा। साथ ही नामांकन करने वालों की पूरी सूची भी भेजी जाएगी। किसी एक नाम पर मुहर प्रदेश नेतृत्व की ओर से लगाई जाएगी।

युधिष्ठिर सिंह (वर्तमान जिलाध्यक्ष), मनोज कुमार शुक्ल, छोटेलाल मौर्य, चंद्रबाला श्रीवास्तव, संजय सिंह, जगदीश चौरसिया व हरिकेश राम त्रिपाठी (उपाध्यक्ष), ब्रह्मानंद शुक्ल व सबल सिंह पालीवाल जिला (जिला महामन्त्री), डा. सदानंद शर्मा व ओमप्रकाश धर द्विवेदी (जिला मन्त्री), शत्रुघ्न कसौधन (कोषाध्यक्ष), गुलाबरध्वज सिंह उर्फ महंत सिंह, मनोज राम त्रिपाठी, घनश्याम मिश्र, दीपक जायसवाल, संतोष शुक्ल, धरणीधर राम त्रिपाठी, सोमनाथ सिंह सोनू, नीरज दुबे, दुर्गेश, देवानन्द शुक्ल, दीपक सिंह, गीतांजलि श्रीवास्तव, बीना उपाध्याय, सुधा सिंह, मनोज सिंह, चंदन मिश्र, अभिमन्यु मौर्य, सुदर्शन साहनी व प्रदीप सिंह।

महानगर अध्यक्ष के लिए नामांकन शुक्रवार को

भाजपा के महानगर अध्यक्ष के नामांकन प्रक्रिया होगी। प्रत्याशी सुबह 11 बजे से दोपहर बाद एक बजे तक भाजपा के बेनीगंज पार्टी कार्यालय में नामांकन कर सकेंगे। चुनाव अधिकारी सुरेश तिवारी के मौजूदगी में नामांकन कार्य संपन्न होगा। यह जानकारी महानगर सह चुनाव अधिकारी ओमप्रकाश शर्मा ने दी है।

काउंसलिंग से पहले थाने के बाहर पति ने पी लिया कीटनाशक, मचा हड़कंप, दो पत्नियों के बीच था उलझा

युवक ने कर ली थी दूसरी शादी,पहली पत्नी की शिकायत पर बुलाया गया था, महिला थाने के पास हुई घटना,स्कूटी से दूसरी पत्नी ले गई जिला अस्पताल

संवाददाता, गोरखपुर। महिला थाना परिसर में गुरुवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब काउंसलिंग के लिए पहुंचे युवक ने थाने के बाहर ही कीटनाशक पी लिया। खजनी के एनवां गांव का रहने वाले राजन कुमार मौर्य और उनकी पत्नी चंदा को आपसी विवाद सुलझाने के लिए परिवार परामर्श केंद्र बुलाया गया था। पत्नी ने पति पर दूसरी शादी का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराई थी। जिला अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती राजन की स्थित खतरे से बाहर बताई जा रही है। दोपहर करीब दो बजे राजन और चंदा महिला थाने बगल में स्थित परिवार परामर्श केंद्र पहुंचे। दोनों को काउंसलिंग के लिए बुलाया गया था। महिला पुलिसकर्मियों ने दूसरी पत्नी सारिका को भी बुलाने को कहा तो फोन करने लिए राजन बाहर निकाला। सारिका को फोन करने के बाद उसने थाने के बाहर गेट के पास चंदा (पहली पत्नी) के सामने कीटनाशक पी लिया। यह देख चंदा घबरा गईं और तुरंत महिला पुलिसकर्मियों को इस घटना की जानकारी दी।

इसी बीच दूसरी पत्नी सारिका भी थाने पहुंच

गई अपनी स्कूटी से राजन को वह जिला अस्पताल ले गई। जहां उसका इलाज जारी है। घटना के बाद थाने में मौजूद लोग और पुलिसकर्मी हैरान रह गए।

चंदा का आरोप है कि राजन ने चोरी से दूसरी शादी कर ली और इसके बाद से दोनों बच्चों के साथ ही उसको खर्चा देना बंद कर दिया। स्थानीय थाने में भी शिकायत हुई लेकिन जब बात नहीं बनी, तो परिवार परामर्श केंद्र भेजा गया।

पहली ही काउंसलिंग जान पर बन आयी

महिला थाने की पुलिस के अनुसार, यह पहली काउंसलिंग थी, और दोनों को अपनी बात रखने के लिए बुलाया गया था। लेकिन राजन ने काउंसलिंग से पहले ही ऐसा कदम उठा लिया।

पुलिस ने बताया कि कीटनाशक पीने की जानकारी पत्नी चंदा ने ही दी, जिसके बाद राजन को तुरंत अस्पताल भेजा गया।

एसपी सिटी अभिनव त्यागी ने कहा कि कीटनाशक पीने वाले राजन की हालत स्थिर बताई जा रही है, और इस मामले की जांच शुरू कर दी है। दूसरी शादी के आरोपों और पारिवारिक विवाद की पूरी सच्चाई जानने के लिए दोनों पक्षों से बयान लिए हैं।

राजन के झूठ ने मुश्किलों से भर दी दो महिलाओं की जिंदगी

अपनी झूठी मोहब्बत और जिम्मेदारियों से बचने के चक्कर में राजन ने दो महिलाओं की जिंदगी को मुश्किलों से भर दिया है। गुरुवार को हुई घटना के बाद से राजन के साथ ही उसकी पहली पत्नी चंदा और दूसरी पत्नी सारिका गहरी मानसिक परेशानी में हैं।

सिकरीगंज के बनकटा की रहने वाली सारिका ने बताया कि सिकरीगंज के दुघरा चौराहे पर इलेक्ट्रॉनिक्स की दुकान चलाने वाले राजन से उसकी मुलाकात दो वर्ष पहले हुई थी। पहली मुलाकात से शुरू हुआ यह रिश्ता प्यार में बदल गया। गर्भवती होने पर राजन ने उससे शादी कर ली लेकिन यह नहीं बताया कि पहले से शादीशुदा है।घरवालों को बताने के बाद गांव ले जाने का भरोसा दिया और रामगढ़ताल क्षेत्र में किराए के मकान में रहने लगा। कुछ महीनों बाद, जब उसे राजन के मोबाइल में बच्चों के टीकाकरण का कार्ड मिला तब पता चला कि राजन पहले से शादीशुदा है और दो बच्चों का पिता है। यह जानने के बाद, सारिका ने राजन की पहली पत्नी चंदा से संपर्क किया और उसे सबकुछ बताया और छोटी बहन बनकर रहने के लिए तैयार हो गई लेकिन चंदा नहीं मानी उसने राजन के विरुद्ध खजनी थाने में तहरीर दे दी। आरोप था कि चोरी से दूसरी शादी करने के बाद परिवार को खर्च नहीं दे रहा है। राजन की उलझी जिंदगी

यूपी के इस जिले में सिस्टम और तकनीक की खामी

गाटा संख्या में सीलिंग के साथ मौजूद काश्तकारी की जमीन का अंश निर्धारण नहीं होने से फंसा पेंच

दो हजार वर्ग फीट जमीन का होना है वरासत, आवेदन करते ही साफ्टवेयर दर्ज कर दे रहा 20 हेक्टयर

गोरखपुर। सीलिंग की भूमि प्रशासन से लेकर आम जन तक के लिए सिरदर्द बनी हुई है। बड़ी संख्या में लोग लाखों–करोड़ों रुपये खर्च फंसाकर दौड़ लगा रहे हैं। ऐसा ही एक मामला महादेव झारखंडी टुकड़ा नंबर दो का सामने आया है, जहां काश्तकारी की महज 2100 वर्ग फीट जमीन की वरासत को लेकर सिद्धार्थनगर, इटवा के रहने वाले अरविंद नाथ दुबे करीब दो साल से परेशान हैं।

अरविंद की पत्नी के नाम दर्ज जमीन जिस गाटा संख्या की है, उसमें सीलिंग की भी जमीन है। अंश निर्धारण नहीं हो पाने की वजह से खाते बंट नहीं सके हैं। ऐसे में वरासत के लिए आवेदन करते ही 2100 वर्ग फीट की जगह साफ्टवेयर संबंधित गाटे की पूरी 20.5240 हेक्टेयर जमीन आवेदक के नाम ही दर्ज कर दे रहा है। खाते बंटे नहीं है इसलिए संबंधित गाटे में मौजूद सीलिंग और काश्तकारी की भूमि का अंश निर्धारण नहीं होने तक वरासत हो पाना संभव नहीं है।

अरविंद का कहना है कि मुंबई में सरकारी नौकरी के दौरान उन्होंने पत्नी उर्मिला दुबे के नाम 2015–16 में महादेव झारखंडी टुकड़ा नंबर दो में करीब 2100 वर्ग फीट जमीन ली थी। दो साल पहले 22 अगस्त 2022 को उनकी पत्नी की कैंसर से मृत्यु हो गई। उसी दौरान उनका गांव इटवा नगर पंचायत बन गई जिससे पंचायत से मृत्यु प्रमाण पत्र मिलना बंद हो गया।

एक साल बाद जब नगर पंचायत से मृत्यु प्रमाण पत्र मिला तो उन्होंने महादेव झारखंडी टुकड़ा नंबर दो में उनकी पत्नी के नाम दर्ज जमीन के वरासत के लिए पिछले साल आवेदन करना शुरू किया।

पता चला कि आनलाइन आवेदन करते ही गाटा संख्या 222ध्1, जिसमें उनका खाता है, उसमें मौजूद पूरी भूमि यानी करीब 20 हेक्टयर, आवेदन में दर्ज हो जा रही है।

चूंकि संबंधित गाटे में सीलिंग की भी जमीन है इसलिए, उसमें सीलिंग और काश्तकारी की जमीन का खाता ही अभी तक नहीं तय हो सका है जिससे अंश निर्धारण नहीं हो पाने की वजह से उनका आवेदन करीब साल भर से लटका है। यानी पहले गांव के नगर पंचायत में शामिल हो जाने से मृत्यु प्रमाण पत्र जारी होने में देरी और अब सीलिंग की जमीन की वजह से उनकी पत्नी के नाम दर्ज भूमि का दो साल से वरासत फंसा पड़ा है।

इसे भी पढ़ें– श्पर्याप्त मुआवजे के बिना किसी को जमीन से बेदखल नहीं कर सकतेश, भूमि अधिग्रहण मामले में सुप्रीम कोर्ट का अहम फैसला

इस मामले में हलका लेखपाल नमन कुमार का कहना है कि संबंधित गाटे में मौजूद भूमि का खाता नहीं बंट पाने और रियल टाइम खतौनी लागू हो जाने से अरविंद दुबे का वरासत संबंधी आवेदन निस्तारित नहीं हो पा रहा है। उनका कहना है कि मामले के निस्तारण के लिए पहले तहसीलदार के वहां खाता निर्धारण के लिए केस दाखिल करना होगा। जब गाटे में मौजूद सीलिंग और काश्तकारी की भूमि का निर्धारण हो जाएगा तो उनकी पत्नी के नाम दर्ज जमीन का वरासत भी हो जाएगा। उधर, जिलाधिकारी कृष्णा करूणेश का कहना है कि मामला संज्ञान में नहीं है। आवेदक प्रार्थना पत्र देते हैं तो उसका निस्तारण कराया जाएगा।

गोरखपुर में एक साथ 5 उद्यमियों के प्रतिष्ठानों पर छापा– मचा हड़कंप, एक से जुड़े हैं सभी

सुबह आठ बजे दिल्ली और लखनऊ की टीम एक साथ इन प्रतिष्ठानों पर पहुंची और छापे की कार्रवाई शुरु कर दी।

गोरखपुर। आयकर विभाग की टीम ने बृहस्पतिवारी की सुबह शहर के पांच व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और आवास पर छापा मारा है। इनमें एक फ्लोर मिल संचालक, एक होटल क्लब उद्यमी, एक आटोमोबाइल सेक्टर, रियल ईस्टेट और एक अन्य व्यापारी के यहां छापा बताया जा रहा है। सुबह आठ बजे दिल्ली और लखनऊ की टीम एक साथ इन प्रतिष्ठानों पर पहुंची और छापे की कार्रवाई शुरु कर दी।

> आयकर विभाग के सूत्रों ने बताया कि ये छापा एक के साथ अन्य प्रतिष्ठानों का जुड़ाव मिलने पर पड़ा है।

आयकर विभाग के सूत्रों ने बताया कि ये छापा एक के साथ अन्य प्रतिष्ठानों का जुड़ाव मिलने पर पड़ा है। सूत्रों ने बताया कि फ्लोर मिल एजेंसी के बड़े उद्यमी के यहां छापा सबसे पहले पड़ा। इसके साथ ही रियल इस्टेट और आटोमोबाइल एजेंसी पर भी टीम पहुंची। इनके सहयोगी क्लब और होटल व्यापारी के प्रतिष्ठानों पर भी टीम पहुंच गई। सूत्रों ने बताया कि फ्लोर मिल संचालक की तरफ से काफी रकम क्लब में लगाया गया था। इसी को देखते हुए इस परिसर में भी छापा पड़ा। इसके अलावा एक अन्य व्यवसाई के यहां भी छापा पड़ने की सूचना है। इस छापे के बाद शहर के व्यापारियों के बीच हड़कंप मच गया है। इस छापे को एक दूसरे से जुड़ा देख अन्य व्यापारी भी सहमें भी हैं कि कहीं उनके यहां भी इस छापे का असर न पड़े। फ्लोर मिल संचालक को गोरखपुर आवास, संत कबीर नगर के फ्लोर मिल पर आयकर की टीम छापा मार रही है।

गोरखपुर में डाक्टरों की फर्जी डिग्री मामले में चार्जशीट तैयार

फरार आरोपियों पर बढ़कर 50 हजार हुआ इनाम, अब तक 3 अरेस्ट

गोरखपुर। गोरखपुर में डॉक्टरों की फर्जी डिग्री मामले की जांच अब पूरी हो गई है। गुलरिहा पुलिस ने चार्जशीट तैयार करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस मामले में गिरोह का सरगना दीपक विश्वकर्मा, जो वाराणसी के चौबेपुर क्षेत्र के बराई का निवासी है, मुख्य आरोपी है। पुलिस ने दीपक समेत दो अन्य आरोपियों को पहले ही अरेस्ट कर जेल भेज दिया है।

इसके अलावा, फरार आरोपी कुशीनगर के तमकुहीराज निवासी अलाउद्दीन की अरेस्टी के लिए पहले 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था, जिसे अब बढ़ाकर 50 हजार रुपये करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। वहीं, प्रयागराज के राम पांडेय की अरेस्टी में तकनीकी कारणों से अभी रोक लगी हुई है।

पुलिस ने जुटाए महत्वपूर्ण दस्तावेज

सिटी अभिनव त्यागी ने बताया कि पुलिस की एक टीम मऊ जिले में गई थी, जहां सीएमओ दफ्तर से कुछ अहम दस्तावेज एकत्र किए गए हैं। इन दस्तावेजों को कोर्ट में साक्ष्य के रूप में पेश किया जाएगा। जांच पूरी हो चुकी है और तीन आरोपी अब जेल में हैं। इनकी सजा दिलाने के लिए ट्रायल जल्द शुरू कराया जाएगा। फरार आरोपी अलाउद्दीन की अरेस्टी के लिए अन्य जिलों की पुलिस टीमें भी जुटी हुई हैं, और उम्मीद जताई जा रही है कि उसे बहुत जल्द अरेस्ट कर लिया जाएगा।

सात महीने पहले हुआ था मामला दर्ज

यह मामला सात महीने पहले, 17 मई को डॉ. राहुल नायक की तहरीर पर गुलरिहा थाने में दर्ज किया गया था। पुलिस ने जांच के दौरान गाजीपुर, वाराणसी और अन्य इलाकों से आरोपियों को अरेस्ट किया था। इन आरोपियों के पास से 50 से अधिक डॉक्टरों की फर्जी डिग्रियां बरामद की गई थीं, जो अब मामले की गंभीरता को और बढ़ाती हैं।

गोरखपुर में शादी के एक साल बाद दिया तीन तलाक

7 लाख रुपए दहेज मांग रहे थे ससुराल वाले नहीं मिला तो पति बोला तलाक,तलाक,तलाक

गोरखपुर। गोरखपुर के गोरखनाथ क्षेत्र में एक महिला को शादी के केवल एक साल दो महीने बाद उसके पति ने तीन तलाक दे दिया। महिला का आरोप है कि उसके पति और ससुराल वाले बार–बार सात लाख रुपये दहेज की मांग कर रहे थे। जब उन्होंने यह राशि देने से इंकार किया, तो पति ने उसे मारपीट कर घर से निकाल दिया और फोन पर तीन तलाक दे दिया। महिला ने इस मामले की शिकायत एसपी सिटी अभिनव त्यागी से की है, जिन्होंने जांच शुरू कर दी है।

शादी के बाद शुरू हुआ दहेज का दबाव

मऊ जिले के कोपागंज थाना क्षेत्र की रहने वाली महिला ने बताया कि उसकी शादी 15 मार्च 2023 को हुई थी। उसी दिन वह विदा होकर अपने पति के साथ गोरखनाथ स्थित ससुराल आई। पहले कुछ दिन सब ठीक चला, लेकिन फिर एक दिन पति ने दबाव डालते हुए कहा कि घरवालों के अनुसार, उसे ससुर से 10 लाख रुपये लेकर लाने होंगे। महिला ने जवाब दिया कि उसके पिता ने शादी के लिए कर्ज लेकर सारी व्यवस्था की थी और अब वह इतने रुपये कहां से लाएंगे। इसके बाद पति ने उसे मारना शुरू कर दिया और ससुराल के अन्य सदस्य भी उसे बचाने के बजाय उसका पक्ष लेने की बजाय और अधिक मारपीट करने की बात करने लगे।

पिता ने कर्ज लेकर दी मदद

महिला के मुताबिक, मारपीट के बाद उसके पिता और अन्य रिश्तेदार ससुराल पहुंचे और उन्होंने ससुराल वालों को समझाने की कोशिश की। लेकिन ससुराल के लोगों ने साफ कह दिया कि जब तक रुपये नहीं मिलते, तब तक महिला को इसी तरह परेशान किया जाएगा।

अंततः महिला के पिता ने ब्याज पर 3 लाख रुपये उधार लेकर पति को दिए, जिससे उसने ई–रिक्शा खरीदी। हालांकि, इसके कुछ ही दिन बाद पति ने फिर से सात लाख रुपये की मांग शुरू कर दी।

इन्कार करने पर पति ने दिया तीन तलाक

महिला का कहना है कि जब उसने इस नई मांग को भी पूरा करने से इनकार किया, तो 15 नवंबर 2024 को उसे घर से बाहर निकाल दिया गया। बाद में पति ने फोन पर तीन तलाक देकर विवाह समाप्त कर दिया।

अब महिला ने **SP** सिटी से न्याय की मांग करते हुए आरोपी पति और ससुराल वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की अपील की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

क्या है नागा साधुओं की रहस्यमयी दुनिया

प्रयागराज। नागा साधुओं की दुनिया बेहद रहस्यमयी होती है। सबसे खास बात है कि नागा साधू कपड़े नहीं धारण करते हैं। वह कड़कड़ाती ठंड में भी नग्न अवस्था में ही रहते हैं। वह शरीर पर धुनी या भस्म लगाकर घूमते हैं। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से महाकुंभ की शुरुआत होगी। इसके कारण संगम की नगरी प्रयागराज दुनियाभर में छाया हुआ है।

महाकुंभ की तैयारियां जोरो–शोरो से चल रही हैं। महाकुंभ मेले में साधू संत पहुंचने लगे हैं। सनातन धर्म में साधू–संतों का काफी महत्व है। हालांकि, कुंभ में आने वाले नागा साधु लोगों के सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद होते हैं। कुंभ की कल्पना तक नागा साधुओं के बिना नहीं की जा सकती है। नागा साधुओं की वेशभूषा और खान–पान आम लोगों से बिल्कुल अलग होती है। हम आपको बताएंगे कि नागा साधू कैसे बनते हैं और कहां रहते हैं।

कपड़े नहीं धारण करते हैं नागा साधू

नागा साधुओं की दुनिया बेहद रहस्यमयी होती है। सबसे खास बात है कि नागा साधू कपड़े नहीं धारण करते हैं। वह कड़कड़ाती ठंड में भी नग्न अवस्था में ही रहते हैं।

वह शरीर पर धुनी या भस्म लगाकर घूमते हैं। नागा का मतलब होता है नग्न। नागा संन्यासी पूरा जीवन नग्न अवस्था में ही रहते हैं। वह अपने आपको भगवान का दूत मानते हैं।

नागा संन्यासी बनने की प्रक्रिया

नागा संन्यासी बनने की प्रक्रिया बहुत लंबी और कठिन होती है। अखाड़ों द्वारा नागा संन्यासी बनाए जाते हैं। हर अखाडे की अपनी मान्यता और परंपरा होती है और उसी के मुताबिक, उनको दीक्षा दी जाती है। कई अखाड़ों में नागा साधुओं को भुट्टो के नाम से भी बुलाया जाता है। अखाड़े में शामिल होने के बाद इनको गुरु सेवा के साथ सभी छोटे काम करने के लिए दिए जाते हैं।

बेहद जटिल होता है जीवन

नागा साधुओं का जीवन बेहद ही जटिल होता है। बताया जाता है कि किसी भी इंसान को नागा साधू बनने में 12 साल का लंबा समय लगता है। नागा साधू बनने के बाद वह गांव या शहर की भीड़भाड़ भरी जिंदगी को त्याग देते हैं और रहने के लिए पहाड़ों पर जंगलों में चले जाते हैं। उनका ठिकाना उस जगह पर होता है, जहां कोई भी न आता जाता हो। नागा साधू बनने की प्रक्रिया में 6 साल बेहद महत्वपूर्ण होते हैं। इस दौरान वह नागा साधू बनने के लिए जरूरी जानकारी हासिल करते हैं। इस अवधि में वह सिर्फ लंगोट पहनते हैं। वह कुंभ मेले में प्रण लेते हैं जिसके बाद लंगोट को भी त्याग देते हैं और पूरा जीवन कपड़ा धारण नहीं करते हैं।

ब्रह्मचर्य की शिक्षा

नागा साधू बनने की प्रक्रिया की शुरुआत में सबसे पहले ब्रह्मचर्य की शिक्षा लेनी होती है। इसमें सफलता प्राप्त करने के बाद महापुरुष दीक्षा दी जाती है। इसके बाद यज्ञोपवीत होता है। इस प्रकिया को पूरी करने के बाद वह अपना और अपने परिवार का पिंडदान करते हैं जिसे बिजवान कहा जाता है। वह 17 पिंडदान करते हैं जिसमें 16 अपने परिजनों का और 17 वां खुद का पिंडदान होता है। अपना पिंडदान करने के बाद वह अपने आप को मृत सामान घोषित करते हैं जिसके बाद उनके पूर्व जन्म को समाप्त माना जाता है। पिंडदान के बाद वह जनेऊ, गोत्र समेत उनके पूर्व जन्म की सारी निशानियां मिटा दी जाती हैं।

बिस्तर पर नहीं सोते हैं नागा संन्यासी

इसके कारण नागा साधुओं के लिए सांसारिक जीवन का कोई महत्व नहीं होता है। नागा संन्यासी अपने समुदाय को ही अपना परिवार मानते हैं। वह कुटिया बनाकर रहते हैं और इनकी कोई विशेष जगह और घर नहीं होता है। सबसे बड़ी बात यह है कि नागा साधू सोने के लिए बिस्तर का भी इस्तेमाल नहीं करते हैं।

युद्ध कला में पारंगत होते हैं

नागा साधुओं को एक दिन में सिर्फ सात घरों से भिक्षा मांगने की इजाजत होती है। अगर उनको इन घरों में भिक्षा नहीं मिलती है, तो उनको भूखा ही रहना पड़ता है। नागा संन्यासी दिन में सिर्फ एक बार ही भोजन करते हैं। नागा साधू हमेशा नग्न अवस्था में रहते हैं और युद्ध कला में पारंगत होते हैं। यह अलग–अलग अखाड़ों में रहते हैं। जूना अखाड़े में सबसे ज्यादा नागा संन्यासी रहते हैं। आदिगुरु शंकराचार्य ने अखाड़े में नागा साधुओं के रहने की परंपरा की शुरुआत की थी।

नागा साधुओं के पास रहस्यमयी शक्तियां होती हैं

बताया जाता है कि नागा साधुओं के पास रहस्यमयी शक्तियां होती हैं। वह कठोर तपस्या करने के बाद इन शक्तियों को हासिल करते हैं। लेकिन कहा जाता है कि वह कभी भी अपनी इन शक्तियों का गलत इस्तेमाल नहीं करते हैं। वह अपनी शक्तियों से लोगों की समस्याओं का समाधान करते हैं। हिंदू धर्म में किसी भी इंसान की मौत के बाद उसके मृत शरीर को जलाने की मान्यता है जो सदियों से चली आ रही है। लेकिन नागा साधुओं के शव को नहीं जलाया जाता है। नागा संन्यासियों का मृत्यू के बाद भू–समाधि देकर अंतिम संस्कार किया जाता है। नागा साधुओं को सिद्ध योग की मुद्रा में बैठाकर भू–समाधि दी जाती है।

कब और कैसे शुरू हुई नागा संन्यासी की परंपरा

धार्मिक ग्रंथों में इस बात का जिक्र है कि आठवीं शताब्दी में सनातन धर्म की मान्यताओं और मंदिरों को खंडित किया जा रहा था। यह देखकर आदि गुरु शंकराचार्य ने चार मठों की स्थापना की और वहीं से सनातन धर्म की रक्षा का दायित्व संभाला। इसके बाद आदि गुरु शंकराचार्य को लगा कि सनातन परंपराओं की रक्षा के लिए सिर्फ शास्त्र ही काफी नहीं हैं, शस्त्र की भी जरूरत है। तब उन्होंने अखाड़ा परंपरा की शुरुआत की। इसमें धर्म की रक्षा के लिए मर–मिटने वाले संन्यासियों को प्रशिक्षण देनी शुरू की गई। नागा साधुओं को उन्हीं अखाड़ों का धर्म रक्षक माना जाता है।

कोहरे में डूबे 40 से ज्यादा जिले, मौसम विभाग ने शीत लहर को लेकर जारी की चेतावनी, इन जिलों में अलर्ट

यूपी में गलन और ठिठुरन की चेतावनी

शीत दिवस होने की संभावना

बांदा, चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, सोनभद्र, मिर्जापुर, चंदौली, वाराणसी, संत रविदास नगर, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, मऊ, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, संतकबीरनगर, बस्ती, कुशीनगर, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, हरदोई, फरुखाबाद, कन्नौज, कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, अयोध्या, अंबेडकरनगर, मथुरा, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, औरैया, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, बदायूं, जालौन, हमीरपुर व आसपास के इलाकों में।

लखनऊ। यूपी में कोहरे का प्रभाव जारी है। गुरुवार को प्रदेश के करीब 40 जिलों में सुबह घना कोहरा देखा गया। मौसम विभाग के अनुसार ऐसा मौसम अभी कुछ दिन और चलेगा। उत्तर प्रदेश में कड़ाके की ठंड के बीच दो दिन से चल रही तेज रफ्तार पछुआ हवाओं से गलन और सिहरन बढ़ गई है। बुधवार को भी प्रदेश के ज्यादातर इलाकों में तेज रफ्तार सर्द पछुआ हवाएं चलीं। कई जगहों पर घना कोहरा छाया रहा। प्रदेश के कई जिलों में घने कोहरे की वजह से दृश्यता 100 मीटर से भी कम देखी गई। गुरुवार की सुबह यूपी में 40 से अधिक जिलों में कोहरा देखा गया। यह कोहरा कहीं कम तो कहीं ज्यादा था। कुछ जिलों से शून्य दृश्यता की भी खबरें हैं। मौसम विभाग की ओर से बृहस्पतिवार के लिए प्रदेश के 50 से ज्यादा जिलों में शीत दिवस (कोल्ड डे) का अलर्ट जारी किया गया है। वहीं 30 से ज्यादा जिलों के लिए घने कोहरे का ऑरेंज अलर्ट है। मौसम विभाग का कहना है कि गलन भरी ठंड और घने कोहरे का सिलसिला अगले तीन से चार दिनों तक ऐसे ही जारी रहने वाला है। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह का कहना है कि प्रदेश में ठंड और मध्यम से घने कोहरे का दौर अगले दो तीन दिनों तक ऐसे ही जारी रहेगा। एक नए विकसित हो रहे पश्चिमी विक्षोभ की वजह से 11 व 12 जनवरी को प्रदेश के विभिन्न जगहों पर बूंदाबांदी के संकेत हैं।

इन जगहों पर है अत्यंत घने कोहरे का अक्षरेंज अलर्ट

आजमगढ़, मऊ, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, संतकबीरनगर, बस्ती, कुशीनगर, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, हरदोई, फरुखाबाद, बाराबंकी, अयोध्या, अंबेडकरनगर, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर व आसपास के इलाकों में।

संभल की शाही जामा मस्जिद विवाद पर यूपी सरकार को नोटिस

कुएं की पूजा पर लगाई रोक

याचिका में मस्जिद कमेटी प्रबंधन ने मांग की थी कि जिलाधिकारी को निर्देश दिया जाए कि यथास्थिति बरकरार रखी जाए। दरअसल जिस निजी कुएं की खुदाई की जा रही है, वह मस्जिद की सीढ़ियों के पास स्थित है।

लखनऊ। सुप्रीम कोर्ट ने संभल की शाही जामा मस्जिद के विवाद में उत्तर प्रदेश सरकार को नोटिस जारी किया है। इस नोटिस में सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से स्टेट्स रिपोर्ट मांगी है। संभल शाही जामा मस्जिद प्रबंधक कमेटी की याचिका पर यह नोटिस जारी किया गया है। याचिका में मस्जिद कमेटी प्रबंधन ने मांग की थी कि जिलाधिकारी को निर्देश दिया जाए कि यथास्थिति बरकरार रखी जाए। दरअसल जिस निजी कुएं की खुदाई की जा रही है, वह मस्जिद की सीढ़ियों के पास स्थित है।

कुएं की पूजा पर रोक

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की सदस्यता वाली पीठ ने प्रशासन को यह भी निर्देश दिया है कि वे नगर पालिका के नोटिस पर कार्रवाई न करें, जिसमें सार्वजनिक कुएं को हरि मंदिर बताया गया है और उसकी पूजा की इजाजत दी गई थी। अब सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में पूजा पर रोक लगा दी है। हालांकि कुएं के सार्वजनिक इस्तेमाल की छूट है। संभल शाही जामा मस्जिद प्रबंधन कमेटी ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर ट्रायल कोर्ट के आदेश को चुनौती दी थी। ट्रायल कोर्ट ने 19 नवंबर 2024 को मस्जिद के सर्वे का निर्देश दिया था। मस्जिद कमेटी की तरफ से वरिष्ठ वकील हुफैजा अहमदी सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए। वहीं वादी पक्ष की तरफ से वरिष्ठ वकील विष्णु शंकर जैन पेश हुए। जैन ने अदालत में कहा कि कुआं मस्जिद के बाहर स्थित है। वहीं अहमदी ने कहा कि कुआं आधा अंदर और आधा मस्जिद के बाहर है। अहमदी ने ये भी दावा किया कि कुआं मस्जिद के इस्तेमाल के लिए ही है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कुएं का इस्तेमाल अगर मस्जिद के बाहर से हो रहा है तो इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट ने मामले के निपटारे तक सभी कारण बताओ नोटिस की कार्यवाही पर रोक लगाई

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों और कैसीनो के खिलाफ जीएसटी विभाग द्वारा जारी एक लाख करोड़ रुपये से अधिक के टैक्स धोखाधड़ी के नोटिस पर रोक लगा दी। जस्टिस जे बी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की पीठ ने कहा कि इस मामले की सुनवाई की जरूरत है और इस दौरान गेमिंग कंपनियों के खिलाफ सभी कार्यवाही स्थगित रहेंगी।

जीएसटी विभाग के अतिरिक्त सालिसिटर जनरल एन. वेंकटरमण ने कहा कि कुछ नोटिस फरवरी में समाप्त हो जाएंगे।

अक्तूबर 2023 में जीएसटी अधिकारियों ने ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के खिलाफ टैक्स चोरी के आरोप में शो–कॉज नोटिस जारी किए थे। सरकार ने एक अक्टूबर 2023 से विदेशी ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के लिए भारत में पंजीकरण अनिवार्य कर दिया था।अगस्त 2023 में जीएसटी काउंसिल ने यह स्पष्ट किया था कि ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफार्मों पर लगाए गए दांव की पूरी राशि पर 28 प्रतिशत जीएसटी लगाया जाएगा।

कई गेमिंग कंपनियों ने इन जीएसटी मांगों के खिलाफ उच्च न्यायालयों में याचिका दायर की थी, जिसमें वे राजस्व अधिकारियों के दावों का विरोध कर रही थीं। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल केंद्र सरकार की याचिका मंजूर करते हुए इस मामले को अपने पास स्थानांतरित कर लिया था, ताकि 28 प्रतिशत जीएसटी के प्रभाव पर अंतिम निर्णय लिया जा सके। कई ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों जैसे गैम्स 24•7, हेड डिजिटल वर्क्स और फेडरेशन ऑफ इंडिया फेंटसी स्पोर्ट्स ने इस जीएसटी आरोप के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक हाई कोर्ट के उस फैसले पर भी रोक लगाई थी, जिसमें ऑनलाइन गेमिंग कंपनी को 21,000 करोड़ रुपये के जीएसटी नोटिस को खारिज कर दिया था।

मुंबई नगर निगम के वृक्ष प्राधिकरण को निर्देश दिया कि वह अदालत की अनुमति के बिना आरे कॉलोनी क्षेत्र में पेड़ों की कटाई की अनुमति न दे। जस्टिस अभय एस ओक और जस्टिस अरविंद कुमार की खंडपीठ ने यह आदेश पारित किया। मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने कोर्ट को सूचित किया कि क्षेत्र में और पेड़ों की कटाई का कोई प्रस्ताव लंबित नहीं है। नवंबर, 2022 में कोर्ट ने महाराष्ट्र सरकार के आरे क्षेत्र में मेट्रो कार शेड की अनुमति देने का फैसला अस्वीकार कर दिया था। एमएमआरसीएल को पेड़ों की कटाई की अनुमति मांगने वाले आवेदनों को आगे बढ़ाने की अनुमति दी थी। अप्रैल, 2023 में कोर्ट ने 84 पेड़ों की अनुमति देने के बावजूद 177 पेड़ों को काटने की मांग करने के लिए एमएमआरसीएल पर 10 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था।

यूपी पुलिस के सिपाही ने जिस युवती से किया दुष्कर्म

उससे ही करने पड़ी शादी... इस डर से लिए सात फेरे

आगरा। यूपी पुलिस में तैनात सिपाही पर युवती ने दुष्कर्म का आरोप लगाया। पीड़िता की शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी सिपाही को हिरासत में लिया। थाने में जब मामला बढ़ने लगा, तो सिपाही के पसीने छूट गए। आरोपी ने युवती संग सात फेरे लेकर उसे अपनी दुल्हन बना लिया।

मैनपुरी कोतवाली क्षेत्र की रहने वाली एक युवती ने लखनऊ में तैनात किशनी निवासी एक सिपाही पर घर में घुसकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया। जब पुलिस उसे पकड़ कर लाई तो दोनों पक्षों में समझौता हो गया। युवती ने सिपाही से माता शीतला देवी मंदिर में अपने अधिवक्ताओं की मौजूदगी में शादी रचा ली।

शहर कोतवाली क्षेत्र की रहने वाली एक युवती ने बृहस्पतिवार की सुबह तहरीर दी। आरोप लगाया कि बुधवार रात को उसे किशनी क्षेत्र के रहने वाले सिपाही ने पूर्व में दर्ज कराए दुष्कर्म के मुकदमे में समझौते के लिए धमकाया। मना करने पर आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म किया। शिकायत के बाद पुलिस आरोपी को कोतवाली ले गई। वहां कुछ देर बाद दोनों पक्ष के अधिवक्ता पहुंच गए।

2023 में हुई थी सिपाही से मुलाकात

युवती ने बताया कि सिपाही लखनऊ में तैनाती है। वर्ष 2023 में मुलाकात के बाद शादी का झांसा देकर उसका यौन शोषण किया था। इसका मुकदमा न्यायालय में चल रहा है। इसी मुकदमे में दबाव बनाने के लिए वह बुधवार की रात को घर पर आया था।

थाने में हो गया समझौता

दोनों पक्ष के लोगों के बीच हुई बातचीत के बाद युवक शादी करने की बात पर राजी हो गया। इसके बाद युवती ने पुलिस से कोई कार्रवाई न करने की बात कही और दोनों अपने अधिवक्ताओं के साथ माता शीतला देवी मंदिर पहुंचे।

वहां विवाह किया। युवती का कहना है कि अब उन्हें कोई शिकायत दर्ज नहीं करानी। इसके बाद सिपाही, युवती को अपने साथ ले गया।

विधान भवन के सामने परिवार ने किया आत्मदाह का प्रयास

लखनऊ स्थित विधानसभा के सामने निगोहां से आए एक परिवार ने आत्मदाह का प्रयास किया। पुलिस की मुस्तैदी से उन्हें बचा लिया गया।

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में विधानभवन के सामने शुक्रवार को एक परिवार ने आत्मदाह का प्रयास किया। हालांकि, पुलिस की मुस्तैदी से मामला टल गया। विधान भवन गेट नंबर 4 के सामने, राजकमल रावत (34) पुत्र बराती लाल, निवासी थाना निगोहां ने अपनी समस्या को लेकर आत्मदाह का प्रयास किया।

राजकमल ने अपने ऊपर पेट्रोल डाल लिया था जिसे सजग महिला सिपाही लक्ष्मी देवी और स्थानीय पुलिस ने तत्काल रोका और थाना हजरतगंज ले जाया गया। राजकमल ने आरोप लगाया कि विपक्षी शहंशाह, इशरत अली और समीर अली निवासी कांटा करौंदी थाना निगोहां द्वारा उनके खिलाफ आईपीसी की धारा 307 के तहत झूठा मुकदमा दर्ज कराया गया था। इस कारण वे 3.5 महीने जेल में रहे। जेल से बाहर आने के बाद भी विपक्षियों द्वारा उन्हें और उनके परिवार को परेशान किया जा रहा है।

परिवार के अन्य सदस्य, पत्नी नीतू कुमारी (27), पुत्री जिया सिंह (06), पुत्र रुद्रांश (03), और पुत्री जियांशी (08) भी इस घटना से प्रभावित हैं। मामले में स्थानीय पुलिस द्वारा स्थिति पर सतर्कता से कार्रवाई की गई।

तलवार से काटी बेटी की गर्दन

जिसे प्यार से पाला, उसी को मार डाला, शाहजहांपुर में हत्यारोपी पिता गिरफ्तार

संवाद न्यूज एजेंसी, शाहजहांपुर । परौर थाना क्षेत्र में पुलिस ने हत्यारोपी भूपेंद्र सिंह को गिरफ्तार कर लिया। उसने प्रेमी से बात करने पर अपनी नाबालिग बेटी की हत्या कर दी थी। इसके बाद फरार हो गया था। वह पंजाब जाने की फिराक में था। उससे पहले ही पुलिस ने उसे दबोच लिया।शाहजहांपुर के परौर थाना क्षेत्र में झूठी शान के लिए बेटी की हत्या के आरोपी पिता को पुलिस ने बृहस्पतिवार को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उसने बताया कि प्रेमी से बात करने से मना करने पर वह बहस करने लगी थी। पूरे समाज में इज्जत बचाने के लिए बेटी को मारना पड़ा। गुस्से में हत्या करने के बाद भूपेंद्र अब पश्चाताप भी कर रहा है।

थाना परौर क्षेत्र के गांव गढ़ी निवासी भूपेंद्र सिंह ने मंगलवार को सुबह करीब 10 बजे बेटी सुनैना (16 वर्ष) को प्रेमी से फोन पर बात करते हुए देखा तो टोक दिया। इस पर बेटी ने उल्टा जवाब दे दिया। बेटी के जवाब देने और बहस करने पर भूपेंद्र भड़क गया।

गुस्से में उसने बेटी पर तलवार से ताबड़तोड़ वार किए। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई थी। हत्या के बाद भूपेंद्र मौके से भाग गया था। बृहस्पतिवार को पुलिस ने सुबह करीब नौ बजे उसे कुबेरपुर से कलान की तरफ जाने वाली सड़क से उसे गिरफ्तार कर लिया। उसकी निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल की गई तलवार बरामद की गई है।

पुलिस की पूछताछ में भूपेंद्र सिंह ने बताया कि वह राजमिस्त्री का काम करता था। गांव में एक लड़के से सुनैना का प्रेम प्रसंग होने पर वह परिवार के साथ दिल्ली चला गया था। वहां भी बेटी का दूसरे लड़के से प्रेम प्रसंग हो गया।

इसके बाद वह परिवार के साथ बेटी को लेकर फिर से गांव आ गया था। बेटी ने गांव वाले प्रेमी से फिर से बातचीत करना शुरू कर दिया था।

बोला– गुस्से में कर दी बेटी की हत्या

भूपेंद्र ने बताया कि बेटी पढ़ने में तेज थी। मेहनत–मजदूरी करके उसकी पढ़ाई करा रहा था कि वह किसी काबिल बन जाएगी। बेटी को कई बार समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। सोचा बाद में समझ जाएगी। जब उसने पलटकर जवाब दिया तो वह सहन नहीं कर पाया और गुस्से में बेटी की हत्या कर दी। भूपेंद्र ने बताया कि प्यार से पाली बेटी को मारने का बहुत अफसोस है। समाज में बेइज्जती के डर से मजबूरी में यह कदम उठना पड़ा।

इधर–उधर छिपकर काटा समय

भूपेंद्र ने बताया कि बेटी की हत्या करने के बाद वह थाने में आत्मसमर्पण करने जा रहा था। जैसे–जैसे थाना करीब आ रहा था, उसके अंदर पुलिस का डर उसके अंदर बढ़ता गया। बाद में वह भाग गया। इसके बाद क्षेत्र में इधर–उधर छुपकर समय काटा। बुधवार को सुबह शाहजहांपुर चला आया।

वह पंजाब जाने के लिए घर रुपये लेने जा रहा था। रात में कई जगह रास्ते में लिफ्ट लेकर सुबह गांव की तरफ जा रहा था। तभी पुलिस को सूचना मिली और उसने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने बताया कि आरोपी की निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल की गई तलवार बरामद की।

आरोपी भूपेंद्र पंजाब भागने की फिराक में था। वह घर से रुपये लेने आया था। तभी सूचना मिलने पर पुलिस ने उसको गिरफ्तार किया। मामले में विधिक कार्रवाई कर उसको जेल भेज दिया गया है। – अमित कुमार चौरसिया, सीओ जलालाबाद

काशी विश्वनाथ मंदिर में बाडी बिल्डर ने बनाई रील

वायरल वीडियो सोशल मीडिया पर बना चर्चा का विषय

वाराणसी। काशी विश्वनाथ धाम परिसर में बॉडी बिल्डर द्वारा बनाई गई रील को लेकर लोग आलोचना कर रहे हैं। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर में बॉडी बिल्डर द्वारा रील बनाने का मामला सामने आया है। रील सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है। मंदिर परिसर में बनाई गई रील को लेकर लोग आलोचना कर रहे हैं।

वायरल वीडियो में दिख रहा है कि बॉडी बिल्डर मंदिर परिसर में प्रवेश कर रहा। इसके बाद बच्चे को लेकर अंदर जा रहा। इसके साथ ही बॉडी बिल्डर मंदिर के एक नंबर गेट के बाहर पोज के साथ रील बनाते दिख रहा है।

स्टेशन पर दोस्त को पहुंचाकर लौट रहा था पुरोहित

वाराणसी। वाराणसी में स्टेशन पर दोस्त को पहुंचाकर लौट रहे पुरोहित की स्कॉर्पियो की टक्कर से मौत हो गई। घटना के बाद पीछा कर स्थानीय लोगों ने चालक को पकड़ कर पुलिस को सौंप दिया। वाराणसी जिले के मंडुवाडीह थानाक्षेत्र के बनारस स्टेशन के पास सड़क हादसे में एक पुरोहित की मौत हो गई।

स्टेशन के मुख्य द्वार की तरफ से दोस्त को ट्रेन में बैठाकर वापस लौट रहे कर्मकांडी पुरोहित को स्कॉर्पियो ने टक्कर मार दी। मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। मौके से भाग रहे स्कॉर्पियो चालक को स्थानीय लोगों ने पकड़कर पुलिस को सौंप दिया।

ट्रेन में दोस्त को बैठाकर निकला था पुरोहित

जानकारी के अनुसार मूलतः गाजीपुर निवासी कन्हैया मिश्रा (25) गायघाट में किराये पर कमरा लेकर रहते थे। गुरुवार की रात में अपने कन्हैया अपने दोस्त सर्वज्ञ को बनारस स्टेशन पर छोड़ने पहुंचे थे। सर्वज्ञ की प्रयागराज में शुक्रवार को कर्मकांड की परीक्षा होनी थी। कन्हैया जैसे ही दोस्त को ट्रेन में बैठा कर लौट रहे थे कि महमूरगंज की तरफ से एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर पहले एक स्कूटी सवार को टक्कर मारी फिर कन्हैया को टक्कर मारते हुए ककरमत्ता की तरफ निकल गई।

पीछा कर स्कश्पियो चालक को लोगों ने पकड़ा

सीनीय लोगों ने पीछा कर स्कॉर्पियो चालक को पकड़ लिया और पुलिस को सूचना दी। हालांकि काफी देर तक भेलूपुर और मंडुवाडीह पुलिस सीमा विवाद में फंसी रही। इसके बाद मंडुवाडीह थानाध्यक्ष भरत उपाध्याय मौके पर पहुंचे और घायल कन्हैया को ट्रामा सेंटर भिजवाया। जहां इलाज के दौरान कन्हैया की मौत हो गई।

मां के साथ किराये पर कमरा लेकर रहता था कन्हैया

कन्हैया अपनी मां पूनम मिश्रा के साथ गायघाट में किराये पर कमरा लेकर रहता था। अमित पांडेय के साथ पूजा पाठ व कर्मकांड का कार्य करता था।

कन्हैया की मौत की सूचना पाकर शुक्रवार को कई लोग मंडुवाडीह थाने पहुंच गए। स्कॉर्पियो चालक के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने लगे। थानाध्यक्ष भरत उपाध्याय ने बताया कि परिजनों द्वारा मिली तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। स्कॉर्पियो सहित चालक पुलिस हिरासत में है।

एक साथ उठेंगे 5 जनाजे, हत्यारों ने एक वर्ष की मासूम को भी नहीं बख्शा, चाची ने खोले कई राज

मेरठ। मेरठ में पांच हत्याओं के बाद आज एक ही परिवार के पांच जनाजे एकसाथ उठेंगे। मृतका आसमा का भाई शफीक इस वारदात की जानकारी लगते ही बदहवास लिसाड़ीगेट पहुंचा, वहीं जांच पड़ताल में बच्चों की चाची ने कई नई बातें बताईं। पांच लोगों की सामूहिक हत्या से गुरुवार देर रात क्षेत्र में सनसनी फैल गई। आज एक ही परिवार के पांच जनाने घर से उठेंगे। इस हत्याकांड को बेहद ही क्रूरता से अंजाम दिया गया था। लिसाड़ी गेट थाना क्षेत्र के 15 फुटा रोड पर मोईन व उसके परिवार का शव बेड के अंदर पड़ा हुआ मिला। इस दौरान घर के मुख्य दरवाजे का ताला लगा हुआ था। देवरानी नजराना ने बताया कि वह बुधवार शाम बच्चों से मिली थी। छोटी बेटी एक अलीजबा की तबीयत खराब थी। एक चिकित्सक से उपचार चल रहा था।

मूल रूप से रुड़की का रहने वाला था परिवार

लिसाड़ी गेट थाना क्षेत्र के 15 फुटा रोड निवासी नजराना ने बताया कि आसमा उसकी जेठानी थी। उसके जेठ मूल रूप से रुड़की के पुसाना गांव के रहने वाले थे। जेठ की शादी लगभग 10 वर्ष पूर्व हापुड़ निवासी आसमा से हुई थी। गांव की जमीन बेचकर उन्होंने लगभग एक साल पूर्व 15 फुटा रोड पर प्लॉट लिया था। लगभग डेढ़ महीना पूर्व ही उन्होंने मकान बनाना शुरू किया था। पड़ोस में ही उनके मकान पर कुछ दिन पूर्व लेंटर डला था।

परिवार से मिली थी नजराना

परिवार में बड़ी बेटी नौ वर्षीय अक्शा, तीन वर्षीय अजीजा व छोटी बेटी एक वर्षीय बेटी अलीजबा थी। नजराना के अनुसार बुधवार शाम वह परिवार के पास हाल–चाल जानने के लिए गई थी और फिर लौट आई। इस दौरान सभी बच्चे खुश नजर आ रहे थे। लगभग आधा घंटा परिवार के पास रहने के बाद वह घर आ गई थी।

अचानक घर पर ताला लगा देख ठनका माथा

गुरुवार सुबह उठी तो देखा कि मकान पर ताला लगा हुआ है। जब देर शाम तक मकान का ताला नहीं खुला तो परिजनों को चिंता हुई थी। जिसके बाद परिजनों ने छत से जाकर देखा तो घर के अंदर लाशे बिखरी हुई थी। अंदर का नजारा देखकर परिजनों के होश उड़ गए थे।

परिवार के 20 लोगों से पूछताछ

परिवार के शव पोस्टमार्टम पर भेजने के बाद पुलिस ने मोईन के 20 परिवार के लोगों से पूछताछ की है। मकान निर्माण के साथ–साथ मोईन ने लिसाड़ीगेट में एक प्लॉट भी खरीदा था। जिसको लेकर परिवार के बीच विवाद भी हुआ था। पुलिस का अंदेशा कि परिवारिक विवाद में हत्या का कारण हो सकता है। देर रात पुलिस ने पांचों शव के पोस्टमार्टम कराने की प्रक्रिया शुरू कर दी। मेडिकल, लिसाड़ीगेट, लोहियानगर व नौचंदी थाना पुलिस की ड्यूटी लगा दी है।

बदहवाश पहुंचा आसमा का भाई

हापुड़ में रहने वाला आसमा का भाई शफीक भी देर रात बदहवास हालत में मौके पर पहुंचा। उसने बताया कि आसमा की यह दूसरी शादी थी। पहले पति से उसकी कोई औलाद नहीं थी। तीनों बेटियों से घर चहकता रहता था। बहन बहनोई और बच्चों के जाने का गम पहाड़ की तरह शफीक पर टूट रहा था। मौके पर मौजूद लोग हमदर्दी लिए उसे ढांढस बंधा रहे थे।

मोईन की तीसरी पत्नी थी आसमा

पुलिस के अनुसार, मोईन की तीन शादी हुई थी। करीब 15 साल पहले उसने पहली शादी जफरा नाम की लड़की से की। एक बेटी इलमा को जन्म देने के बाद जफरा की मौत हो गई। वह बीमार रहती थी। फिलहाल बेटी अपनी बुआ के साथ किठौर में रहती है। दूसरी शादी 11 साल पहले मोईन ने नारा से की, लेकिन आए दिन के झगड़ों के बाद उसका तलाक हो गया। फिर मोईन ने आसमा से शादी की। आसमा पहले से शादीशुदा थी। उसकी पहली शादी शाहजहां कॉलोनी निवासी दीन मोहम्मद से हुई थी। मोईन और आसमा के तीन बेटियां हुईं। यह घटना गुरुवार देर रात सामने आई। शुक्रवार को जैसे ही लोगों को इसकी जानकारी हुई तो समाजसेवी और जनप्रतिनिधि क्षेत्र में पहुंचे और मृतकों के परिजनों को सांत्वना दी। वहीं सपा विधायक अतुल प्रधान मेडिकल मोर्चरी पहुंचे, जहां उन्होंने परिजनों से बातचीत की। वहीं लिसाड़ी गेट थानाक्षेत्र के सोहेल गार्डन में समाजसेवी बाबू मलिक कार्यकर्ताओं के साथ पहुंचे।

UP पुलिस के सिपाही ने जिस युवती से किया दुष्कर्म उससे ही करवे पड़ी शादी...

लखनऊ। मैनपुरी कोतवाली क्षेत्र की रहने वाली एक युवती ने लखनऊ में तैनात किशनी निवासी एक सिपाही पर घर में घुसकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया। जब पुलिस उसे पकड़ कर लाई तो दोनों पक्षों में समझौता हो गया। युवती ने सिपाही से माता शीतला देवी मंदिर में अपने अधिवक्ताओं की मौजूदगी में शादी रचा ली।

संभल दंगा 47 साल बाद आसान नहीं संभल दंगे की जांच...

संभल। 29 मार्च 1978 को हुए संभल दंगे के 47 साल बाद अब इसकी जांच का मुद्दा फिर गर्माया है। गृह विभाग के सचिव ने संभल जिला प्रशासन को पत्र लिखकर रिपोर्ट मांगी है लेकिन यह इतना आसान नहीं है। 47 साल पहले संभल मुरादाबाद जिले का हिस्सा था। ऐसे में मुरादाबाद जिला प्रशासन को भी इसमें मशक्कत करनी पड़ सकती है।

'महाकुंभ सनातन के गौरव का महाकुंभ है' CM योगी

योगी आदित्यनाथ ने सर्किट हाउस में आकाशवाणी के एफएम रेडियो कुंभवाणी चौनल का शुभारंभ किया। इस मौके पर सीएम ने कहा कि महाकुंभ सनातन के गौरव का महाकुंभ है...जो लोग लोगों को जातियों में बांटना चाहते हैं, उन्हें देखना चाहिए कि कुंभ से जाति का भेद मिट जाता है, पंथ और लिंग... दुनिया भर से लोग यहां आ रहे हैं... प्रसार भारती ने न केवल महाकुंभ कार्यक्रम को पूरे दिन प्रसारित करने की तैयारी की है, बल्कि दूरदराज के इलाकों में भी धार्मिक उद्धरण दिए जाएंगे... इससे लोगों की आस्था बढ़ेगी।

मेरठ सामूहिक हत्याकांड में नया खुलासा मोईन ने की थीं 3 शादी तीसरी पत्नी आसमा भी थी शादीशुदा...

मेरठ के लिसाड़ीगेट के सुहेल गार्डन में पांच लोगों की हत्या के बारे में जिसने भी सुना वह सन्न रह गया। हत्यारों ने दंपती और उनके तीन बच्चों को मौत के घाट उतार दिया। मरने वालों में शामिल मोईन की तीन शादी हुई थीं। करीब 15 साल पहले उसने पहली शादी जफरा नाम की लड़की से की।

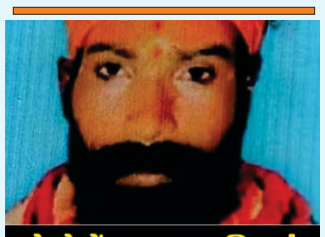

धोखे में मारा गया शिवचंद्र दूसरे साधु ने बताई चौंकाने वाली बात

बरेली के फरीदपुर थाना क्षेत्र के गांव पचौमी स्थित काली मंदिर परिसर में बाहर से आए साधु की डंडे और ईंट से सिर कूंचकर हत्या कर दी गई। बृहस्पतिवार सुबह मंदिर परिसर में उनका लहूलुहान शव मिला। सूत्रों के मुताबिक, काली मंदिर पर कब्जे को लेकर दो साधुओं में पहले से विवाद चल रहा था। इसी विवाद में बाहर से आए तीसरे साधु की हत्या कर दी गई।

विराट–अनुष्का वृंदावन पहुंचे

प्रेमानंद महाराज से की भक्ति मार्ग पर चलने की बात

नई दिल्ली । कोहली और अनुष्का का प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंचने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। प्रेमानंद महाराज के आधिकार इंस्टाग्राम हैंडल पर वीडियो पोस्ट किया गया है जिसमें कोहली और अनुष्का अपने दोनों बच्चे वामिका और अकाय के साथ प्रेमानंद महाराज के दर्शन करने पहुंचे हैं।

भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली पत्नी अनुष्का शर्मा और अपने दोनों बच्चों के साथ प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंचे हैं। ऑस्ट्रेलिया दौरे से वापस आने के बाद कोहली और अनुष्का वृंदावन में प्रेमानंद गोविंद शरण जी महाराज के आश्रम पहुंचे और उनका आशीर्वाद लिया। मालूम हो कि कोहली पिछले कुछ समय से खराब फॉर्म से गुजर रहे हैं और ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भी वह रन बनाने के लिए जूझ रहे थे।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वीडियो

कोहली और अनुष्का का प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंचने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है और एक घंटे में ही लाखों लोग इस वीडियो को लाइक कर चुके हैं। प्रेमानंद महाराज के आधिकार इंस्टाग्राम हैंडल पर वीडियो पोस्ट किया गया है जिसमें कोहली और अनुष्का अपने दोनों बच्चे वामिका और अकाय के साथ प्रेमानंद महाराज के दर्शन करने पहुंचे हैं। इस दौरान अनुष्का प्रेमानंद महाराज से बात कर रही हैं।

बच्चों के साथ किए प्रेमानंद महाराज के दर्शन

कोहली और अनुष्का इससे पहले भी प्रेमानंद महाराज के आश्रम पहुंच चुके हैं और इस बार वे अपने बच्चों के साथ वृंदावन पहुंचे हैं। वीडियो में दिख रहा है कि कोहली और अनुष्का जैसे ही

प्रेमानंद महाराज के सामने पहुंचे और सिर झुकाकर प्रणाम किया। कोहली जैसे ही प्रेमानंद महाराज के सामने पहुंचे तो उन्होंने इस भारतीय बल्लेबाज से पूछा, मन प्रसन्न है? इस पर कोहली ने सिर हिलाकर हां कहा और वह मुस्कुराते नजर आए।

अनुष्का–प्रेमानंद महाराज के बीच क्या हुआ संवाद?

अनुष्का ने इस दौरान प्रेमानंद महाराज से कहा कि जब वे पिछली बार यहां आई थीं तो उनसे कुछ सवाल करना चाहती थीं, लेकिन वहां मौजूद सभी ने कुछ ना कुछ वैसा ही सवाल कर लिया था जो वह पूछना चाहती थीं। अनुष्का ने प्रेमानंद महाराज से कहा, श्आप बस मुझे प्रेम भक्ति दे दो।श इस पर प्रेमानंद महाराज ने कहा, श्बहुत बहादुर हैं क्योंकि संसार का यह सम्मान प्राप्त होने पर भक्ति की तरफ मुड़ पाना कठिन होता है।

हमें लगता है कि विशेष प्रभाव इन पर (कोहली पर) भक्ति का पड़ेगा। इस पर अनुष्का ने कहा, श्भक्ति के ऊपर कुछ नहीं है। फिर प्रेमानंद महाराज ने हंसकर कहा, हां, भक्ति के ऊपर कुछ नहीं है। भगवान के भरोसा पर रहो, नाम जपो और खूब प्रेम से और खूब आनंद से रहो।

बक्षर्डर–गावस्कर ट्रश्फी में नहीं चला था बल्ला

कोहली हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ संपन्न हुई पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में कुछ खास प्रदर्शन नहीं कर सके थे। उन्होंने पर्थ टेस्ट की दूसरी पारी में शतक जड़ा था, लेकिन इसके बाद उनकी लय गड़बड़ा गई थी।

कोहली बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान ऑफ स्टंप के बाहर जाती गेंदों पर लगातार परेशान हुए और कुल आठ बार ऐसी गेंदों पर आउट हुए। उन्होंने पांच मैचों में 23.75 के औसत से 190 रन बनाए। कोहली के टेस्ट में भविष्य को लेकर भी चर्चा शुरू हो गई है।

लखनऊ खुर्रमनगर ओवरब्रिज का एक लेन खुला...

2 किमी लंबा पुल 267 करोड़ में हुआ तैयार

लखनऊ। लखनऊ में खुर्रमनगर ओवरब्रिज 267 करोड़ की लागत से बनकर तैयार हो गया। शुक्रवार से लोगों के लिए एक लेन खोल दिया गया है। फिलहाल, ब्रिज पर सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक यानी 12 घंटे ही गाड़ियों को एंट्री मिलेगी। बाकी समय में ब्रिज की फिनिशिंग होगी। अधिकारियों की मौजूदगी में पूजा–पाठ और नारियल फोड़कर ओवरब्रिज का एक लेन शुरू किया गया। ओवरब्रिज पूरी तरह से चालू होने के बाद 7 लाख लोगों को सुविधा मिलेगी। ओवरब्रिज को धनुष आकार यानी आर्च मॉडल पर तैयार किया गया है। बताया जा रहा है कि खरमास के बाद में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गड़करी इसका उद्घाटन कर सकते हैं।

ओवरब्रिज फिनिशिंग का काम बाकी

ओवरब्रिज बनकर तैयार हो गया है, लेकिन फिनिशिंग का काम पूरा नहीं है। अभी रेलिंग नहीं लगी है। लाइटिंग का काम भी पूरा किया जा रहा है। बाएं लेन में काफी काम बचा हुआ है। साइन बोर्ड आ चुके हैं, लेकिन लगे नहीं हैं। बाईं लेन का काम पूरा करने के लिए बैरिकेडिंग लगी है।

900 मीटर अधिक बढ़ा दिया ब्रिज

ओवरब्रिज का काम चार महीने की देरी से खत्म हुआ। इसका कारण ट्रैफिक के दबाव के चलते काम प्रभावित होना है। धनुष आकार पर नई डिजाइनिंग में ब्रिज बनना भी कारण है। 23 मार्च 2022 को इसका निर्माण शुरू हुआ था और सितंबर 2023 तक काम को पूरा हो जाना चाहिए था। ओवरब्रिज का शुरुआती बजट 180 करोड़ रुपए था। पहले ब्रिज को खुर्रमनगर के आगे उतारने की तैयारी थी, लेकिन इसे जगरानी तक बढ़ा दिया गया। इससे पुल समय से तैयार नहीं हो सका।

जाम से मिलेगी मुक्ति

ओवरब्रिज के चलते खुर्रमनगर, जगरानी, सेक्टर–25 और बंधे वाले रोड पर जाम से मुक्ति मिलेगी। यहां पर रहने वाले करीब सात लाख लोगों को इसका फायदा मिलेगा। टेढ़ी पुलिया से आने वाले लोग इसकी दाहिनी लेन पर सीधे आ सकेंगे। पॉलिटेक्निक फ्लाईओवर पर वाहन के चढ़ते ही मुंशी पुलिया, खुर्रमनगर, टेढ़ी पुलिया, इंजीनियरिंग कॉलेज फ्लाईओवर होते हुए आइआइएम रोड फ्लाईओवर से होते हुए जा सकेंगे। आने वाले एक सप्ताह में दूसरी लेन पर वाहन चलने लगेंगे।

सुबह 6 से शाम 6 बजे तक एक लेन पर एंट्री

सेक्टर– 19 इंदिरा नगर से शुरू होकर जगरानी मिनी स्टेडियम तक ओवरब्रिज बना है। दो किलोमीटर लंबे पुल पर सुबह छह बजे से शाम 6 बजे तक वाहन आवाजाही कर सकेंगे। पीडब्ल्यूडी, एनएच इंजीनियर राजेश कुमार पिथौरिया ने कहा कि ब्रिज बनकर तैयार है। जल्द ही दूसरी लेन भी शुरू कर दी जाएगी। वहीं, विजय कंस्ट्रक्शन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के इंजीनियर शुभम श्रीवास्तव ने कहा कि आधुनिक तकनीक के साथ ओवरब्रिज का निर्माण किया गया है। इससे लोगों को फायदा होगा। ब्रिज निर्माण में कोई दुर्घटना नहीं हुई है। कुशलता पूर्वक इसका निर्माण पूरा किया गया है।

लखनऊ में विधानसभा के बाहर सुसाइड करने पहुंचा परिवार

बच्चों पर डाला पेट्रोल, पुलिस ने पकड़ा तो कहा- साहब..मर जाने दो

हजरतगंज थाने में राजकमल रावत के साथ पत्नी नीतू कुमारी (27) तीन छोटे बच्चे– जिया (6), रुद्रांश (3) जियांशी (8 महीना)

हजरतगंज थाने में राजकमल रावत के साथ पत्नी नीतू कुमारी (27) तीन छोटे बच्चे– जिया (6), रुद्रांश (3) जियांशी (8 महीना)

लखनऊ। लखनऊ में विधानसभा के बाहर पति ने पत्नी और तीन बच्चों के साथ आत्मदाह करने की कोशिश की। वह 5 लीटर की पिपलिया में ढाई लीटर पेट्रोल लेकर पहुंचा था। पेट्रोल डालते देख विधानसभा के पास तैनात सुरक्षा कर्मी मौके पर पहुंचे। सभी को पकड़कर हजरतगंज थाने भेजा। यहां पूछताछ में उसने इलाके के दबंगों द्वारा परेशान करने का आरोप लगाया। उसने कहा– हमको मर जाने दो साहब। हम बहुत दुखी हैं। हालांकि हजरतगंज पुलिस ने परिवार को कार्रवाई का आश्वासन देकर घर भेज दिया है।

कैसे गंदी नजर से खुद को बचाती है 'सुंदरी'

मुम्बई। सीरीज में लाए हैं एक काफी चर्चित फिल्म की कहानी. जिसकी चर्चा तो काफी हुई थी लेकिन यूजर्स ने अपने रिव्यू में बताया आखिर इस फिल्म को सच में देखना चाहिए या नहीं. तो चलिए साउथ की सस्पेंस थ्रिलर फिल्म के बारे में बताते हैं. ओटीटी पर कंटेंट की भरमार है. कई फेमस ओटीटी प्लेटफॉर्म है जो शानदार कंटेंट का दावा करके तमाम फिल्में रिलीज करते हैं. मगर एक यूजर के लिए काफी दिक्कत हो जाती है कि आखिर वह क्या देखें. स्क्रॉल करते करते घंटों बीत जाते हैं. तो ऐसे में हम शैंज जव˘जबीश सीरीज में दर्शकों को बताते हैं कि आखिर आप कौन सी फिल्म देख सकते हैं और कौन सी नहीं.

साउथ की सस्पेंस–थ्रिलर फिल्म

आज की कड़ी में हम ऐसी ही फिल्म लाए हैं जिसकी चर्चा तो बहुत होती है. जिसकी कहानी होश भी उड़ाती है मगर यूजर्स के रिव्यू कुछ और ही हैं. इस फिल्म का नाम है श्सुंदरीश. ये कहानी काफी कठिनाओं को दिखाती है. एक औरत की कहानी को बयां करती है कि कैसे उसकी शादीशुदा जिंदगी में तबाही आ जाती है. मगर क्या डायरेक्टर और राइटर इस कहानी को बखूबी बना पाए? चलिए बताते हैं.

सुंदरी है साउथ की सस्पेंस–थ्रिलर ड्रामा फिल्म

सुंदरी एक साउथ की सस्पेंस–थ्रिलर ड्रामा फिल्म है जिसमें इमोशनल एंगल जोड़ा गया है. ये 2021 में रिलीज हुई थी. जिसे सेंसर बोर्ड ने यूए सर्टिफिकेट से पास किया था. फिल्म की कहानी सुंदरी नाम की महिला के इर्दगिर्द ही बुनी गई है. ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दर्शक इसे हिंदी में भी देख सकते हैं.

फिल्म के बारे में

सुंदरी फिल्म की बात करें तो फिल्म के प्रोड्यूसर रिजवान हैं. जिसके डायरेक्टर कल्याणजी गोगाना हैं. शराब के सेवन, बोल्ड सीन, हिंसा वाले सीन्स के चलते इसे यूए सर्टिफिकेट मिला है. 13 अगस्त 2021 में ये फिल्म रिलीज हुई थी. फिल्म में पूर्ण अर्जुन अंबाती, मणिकांत, सुनीता मोहन से लेकर योगी जैसे कलाकार हैं.

सुंदरी की कहानी

सुंदरी की कहानी की बात करें तो ये एक गांव की लड़की सुंदरी की कहानी है. एक बार गांव में पढ़ा लिखा लड़का जो पेशे से सॉफ्टवेयर कर्मचारी है, वह आता है. वह सुंदरी को देखकर ही दिल दे बैठता है. उसे उससे प्यार हो जाता है. दोनों शादी करते हैं और घर बसा लेते हैं. मगर शादी के बाद लड़के की नौकरी छूट जाती है. जॉब जाने की वजह को वह लड़की पर मड़ देता है कि उसकी वजह से वह जॉबलेस हुआ है.

गंदी नजर और सुंदरी की मुसीबत

सुंदरी काफी खूबसूरत है. घर पर आने वाले कई आदमियों की उसपर गंदी नजर रहती है. कई लोगों से वह बाल बाल बचती है. फिर उसे भी लगने लगता है कि शायद उसी की वजह से पति परेशान है. तो वह बाबा की शरण में जाती है. वह बाबा उसे सलाह देता है कि उसे गैर मर्द के साथ संबंध बनाना पड़ेगा. अब आगे क्या होगा. कैसे वह इस परेशानी से निकलेगी. ये सब आप 1 घंटा 45 मिनट की फिल्म में देख सकेंगे।

राशा थडानी पा लेंगी शोहरत

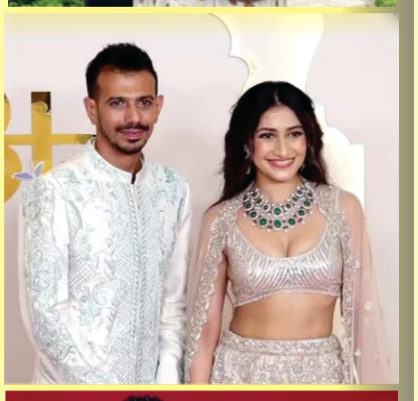

रवीना टंडन की लाडली बेटी राशा थडानी फिल्मी सफर की शुरुआत करने जा रही हैं। अजय देवगन के भांजे अमन के साथ आजाद फिल्म में उनकी जोड़ी बनी है। फिल्म का गाना उई अम्मा रिलीज के बाद से ही लोगों को खूब पसंद आ रहा है। आइए जानते हैं कि क्या राशा अपनी मां की तरह लोगों कि दिलों पर राज कर पाएंगी।

एंटरटेनमेंट डेस्क, नई दिल्ली। 90 के दशक में फिल्मी करियर की शुरुआत करने वाली रवीना टंडन लोगों के दिलों पर राज करती हैं। साल 1991 की पत्थर के फूल उनकी पहली मूवी थी। खास बात है कि एक्ट्रेस ने डेब्यू मूवी से ही खुद को बतौर बेहतरीन एक्ट्रेस साबित करने में सफलता पाई। इसके बाद उन्होंने एक से बढ़कर फिल्मों में काम किया। अक्षय कुमार के साथ मोहरा फिल्म से भी उन्होंने लाइमलाइट चुराई। इस फिल्म का गाना शटिप टिप बरसा पानीश आज भी लोगों की जुबां पर रहता है। अब सवाल खड़ा होता है कि क्या राशा थडानी भी अपनी मां की लेगेसी को आगे बढ़ा पाएंगी।

आजाद से डेब्यू करेंगी राशा थडानी

राशा थडानी इन दिनों लगातार सुर्खियों में हैं। वह एक्टिंग की दुनिया में कदम रखने जा रही हैं। अजय देवगन की आजाद फिल्म का इंतजार फैंस लंबे समय से कर रहे हैं। इसके जरिए दो स्टार किड्स अपने फिल्मी करियर की शुरुआत करेंगे। पहला नाम रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी का है। वहीं, अजय के भांजे अमन देवगन भी इस मूवी से बतौर एक्टर नजर आएंगे। फिल्म का ट्रेलर पहले ही रिलीज हो चुका है। इसमें घोड़े की रोचक कहानी को दिखाया गया है। अजय देवगन की अपीयरेंस ने भी दर्शकों की एक्साइटमेंट बढ़ाने का काम किया है।

उई अम्मा सक्षन्ग से राशा ने चुराई लाइमलाइट

रवीना की लाडली राशा का पहला गाना खूब चर्चा में है। शायद वह पहली स्टारकिड होंगी, जिसने फिल्म के पहले सॉन्ग से ही लाइमलाइट चुराने का काम किया है। राशा थडानी फिल्म प्रमोशन के दौरान इस सॉन्ग का स्टेप करती नजर आती हैं। सोशल मीडिया पर उई अम्मा पर उनके डांस को खूब पसंद किया जा रहा है। इन दिनों उनका एक नया वीडियो चर्चा में बना हुआ है, जिसमें उन्हें 12वीं क्लास के बोर्ड एग्जाम की तैयारी करते हुए देखा गया।

'ये सच हो सकता है और नहीं भी' तलाक की खबरों पर युजवेंद्र चहल

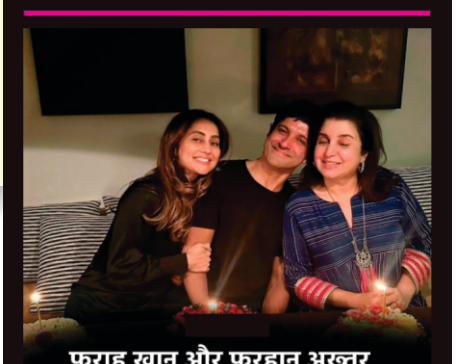

टीम इंडिया के प्लेयर युजवेंद्र चहल और धनश्री इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं. पिछले कुछ समय से इस कपल के अलग होने की खबरें सामने आ रही हैं.तलाक को लेकर चर्चा नें बनी हुई धनश्री बहुत ट्रोल हो रही थीं. उन्होंने इस पर एक पोस्ट भी शेयर किया था. अब धनश्री के पोस्ट के बाद चहल ने भी एक पोस्ट शेयर किया है.युजवेंद्र ने अपने पोस्ट में तलाक की खबरों पर सीधे तौर पर कोई रिएक्ट नहीं किया है. मगर उन्होंने कुछ ऐसा लिख दिया है जिसके बाद से उनका पोस्ट बहुत ज्यादा वायरल हो रहा है. उन्होंने पोस्ट में लिखा है कि सोशल मीडिया पर जो दावे किए जा रहे हैं वो सच हैं या नहीं भी.युजवेंद्र ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा– श्मैं अपने सभी फैंस के प्यार और सपोर्ट के लिए आभारी हूं, जिसके बिना मैं यहां तक नहीं पहुंच पाता. लेकिन यह सफर अभी खत्म नहीं हुआ है!!! क्योंकि मेरे देश, मेरी टीम और मेरे फैंस के लिए अभी भी कई अविश्वसनीय ओवर बाकी हैं!!! जबकि मुझे एक खिलाड़ी होने पर गर्व है, मैं एक बेटा, एक भाई और एक दोस्त भी हूं।

L&T चेयरमैन पर भड़कीं दीपिका- 'इतने सीनियर होकर भी ऐसी बातें...'

फराह खान और फरहान अख्तर ने एक साथ मनाया बर्थडे

फराह खान आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं. कोरियोग्राफर होने के साथ ही उन्होंने कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों को डायरेक्टर किया है. फराह आज अपना 60वां बर्थडे सेलिब्रेट कर रही हैं. वहीं अभिनेता फरहान अख्तर का भी आज बर्थडे है. वो आज 51 साल के हो गए हैं. फराह और फरहान ने एक साथ केक काटकर अपना जन्मदिन मनाया..

भोजपुरी इंडस्ट्री के लिए दमदार होगा 2025

आज हम आपको उन भोजपुरी फिल्मों के बारे में बताएंगे जो चर्चा में बनी हुई है. तो कई फिल्में इस साल रिलीज होंगी. 60 साल की हो गई ये बच्ची, फिल्म इंडस्ट्री में चलता है सिक्का, कभी तंगी के चलते स्टोर रूम में गुजारा बचपनय अब करोड़ों की है मालकिन 2025 भोजपुरी दर्शकों के लिए भी खास होने जा रहा है. इस साल भोजपुरी जगत के कई सितारों की शानदार फिल्में सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार हैं. इस लिस्ट में खेसारी लाल यादव की डंस के साथ ही पवन सिंह की पावर स्टार समेत अन्य दमदार–मनोरंजक फिल्में शामिल हैं. भोजपुरी सुपरस्टार खेसारी लाल यादव की फिल्म डंस का टीजर हाल ही में आउट हुआ था. वहीं, ट्रेलर 14 जनवरी को आउट होगा. भोजपुरी सुपरस्टार खेसारी लाल यादव नई फिल्म डंस में जमकर एक्शन करते नजर आएंगे. हाल ही में जारी 1 मिनट 27 सेकंड के टीजर में खेसारी दुश्मनों के छक्के छुड़ाते नजर आए थे. ऐसे में अब भोजपुरी दर्शक और भी उत्साह में आ गए और ट्रेलर के लिए एक्साइटेड हैं, जो 14 जनवरी को आउट होगा. श्डंसश का निर्देशन धीरज ठाकुर ने किया है. वहीं, सुधीर सिंह, जितेंद्र सिंह और इंद्रेश बहादुर सिंह फिल्म के निर्माता हैं।

उर्वशी रौतेला इन दिनों अपनी आगामी फिल्म डाकू महाराज के गाने 'दबिड़ी दीबिड़ी' को लेकर काफी चर्चा में चल रही हैं।

केआरके की आलोचना से परेशान उर्वशी

एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेत्री उर्वशी रौतेला ने हाल ही में कमाल आर खान पर पलटवार किया, जिन्होंने डाकू महाराज के उनके गाने दबीड़ी दबीड़ी की आलोचना करते हुए इसे अश्लील बताया था। उर्वशी रौतेला इन दिनों अपनी आगामी फिल्म श्डाकू महाराजश के गाने 'दबिड़ी दीबिड़ी' को लेकर काफी चर्चा में चल रही हैं। सोशल मीडिया पर गाने के स्टेप्स की काफी आलोचना हो रही है। इसी क्रम में केआरके ने भी गाने के स्टेप्स को काफी श्वल्गरश बताया था। अब उर्वशी रौतेला ने केआरके की ट्रोलिंग का मुंहतोड़ जवाब दिया है। आइए जानते हैं कि अभिनेत्री ने क्या कहा है।

केआरके ने गाने को बताया था अश्लील

केआरके ने गाने को ट्रोल करते हुए कहा कि उर्वशी को ऐसे श्अश्लीलश डांस स्टेप्स करने के लिए शर्म आनी चाहिए। एक्स पर उनके पोस्ट में लिखा था, ष्तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री के लोगों को ऐसे अश्लील गाने शूट करने में शर्म नहीं आती? तो बेहतर है कि एडल्ट फिल्में बनाना शुरू कर दें। उर्वशी को भी ऐसे गाने करने के लिए शर्म आनी चाहिए।

उर्वशी ने दिया मुंहतोड़ जवाब

उर्वशी ने केआरके पर निशाना साधते हुए लिखा, ष्यह दुख की बात है कि कुछ लोग जिन्होंने कुछ हासिल नहीं किया, वे उन लोगों की आलोचना करने के हकदार महसूस करते हैं, जो अपने काम को लेकर काफी मेहनत करते हैं। असली शक्ति दूसरों को गिराने में नहीं है, बल्कि उन्हें ऊपर उठाने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने में है।

सोशल मीडिया पर भी हुई थी आलोचना

सोशल मीडिया पर लोगों ने इस जोड़ी के बीच उम्र के अंतर को लेकर भी आलोचना की है। 64 साल के अभिनेता–राजनेता एनबीके 30 साल की उर्वशी के साथ यह डांस कर रहे हैं। 'दबिड़ी दीबिड़ी' को शेखर मास्टर ने कोरियोग्राफ किया है। निर्माताओं ने अभी तक आलोचना पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

इस दिन होगी रिलीज

श्डाकू महाराज में बॉबी देओल, प्रज्ञा जयसवाल, श्रद्धा श्रीनाथ और चंदिनी चौधरी भी शामिल हैं। बॉबी कोल्ली की लिखित और निर्देशित यह फिल्म 12 जनवरी को बड़े पर्दे पर रिलीज होने के लिए तैयार है।

'दबिड़ी दीबिड़ी' को वल्गर कहने पर बोलीं– खुद जिंदगी में...

बांग्लादेश के तमीम इकबाल अपनी पत्नी, बेटे और बेटी के साथ, देखते हैं कौन कौन प्यारी सी फैमली को लाइक करता हैं ।

जब कोहली के खिलाफ कप्तानी करने उतरा 7 साल का ऑस्ट्रेलियाई बच्चास भारत–ऑस्ट्रेलिया के बीच 26 दिसंबर 2018 को मेलबर्न में तीसरे टेस्ट मैच की शुरुआत हुई। बॉक्सिंग डे टेस्ट में सात साल के आर्ची शिलर को ऑस्ट्रेलिया टीम का सहायक कप्तान बनाया गया था। लेग स्पिनर आर्ची का ग्रीन कैप पहनाकर स्वागत किया गया, जो बेहद भावुक वक्त था। आर्ची दिल की बीमारी से जूझ रहे हैं। उनका सपना था कि वह ऑस्ट्रेलियाई टीम का कप्तान बनें, जिसे क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) द्वारा पूरा कर दिया गया था। इस दौरान विराट कोहली ने आर्ची को स्पेशल गिफ्ट दिया था। कोहली ने ऑस्ट्रेलिया की टीम शीट पर सिग्नेचर कर आर्ची को ये भेंट किया। आर्ची दिल की बीमारी से पीड़ित हैं और उनकी तीन बार ओपन हार्ट सर्जरी हो चुकी है। वे बड़े होकर ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम का कप्तान बनना चाहते हैं, इसीलिए क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने उनकी यह इच्छा पूरी की थी।

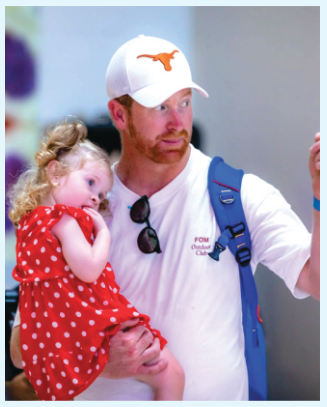

अफ्रीका के बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन अपनी बेटी के साथ,

भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा फैन के साथ

भारत को ऑस्ट्रेलिया में BGT ट्रॉफी जिताने वाले कप्तान अजिंक्य रहाणे की पत्नी और बेटी

टीम इंडिया को लड़ना सिखाने वाले कप्तान सौरव गांगुली

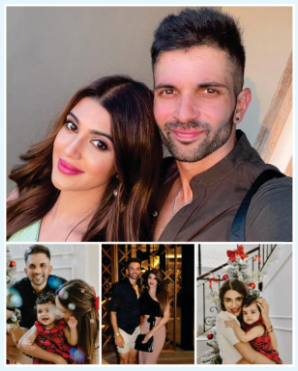

अफ्रीका के एकमात्र हिंदू क्रिकेटर केशव महाराज अपने बच्चों के साथ।

पाकिस्तान के एकमात्र हिंदू क्रिकेटर दानिश कनेरिया अपने बच्चों, पत्नी और माँ के साथ, कितने लाइक्स मिलते हैं? अगर रोहित–कोहली की फैमली होती तो लाइक्स की बारिश हो जाती!
दानिश कनेरिया, जो पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के एकमात्र हिंदू खिलाड़ी रहे हैं, हाल ही में अपने बेटे और बेटी के साथ एक तस्वीर साझा की। लेकिन अफसोस, लोगों का ध्यान इस तस्वीर पर वैसा नहीं गया जैसा स्टार क्रिकेटर्स रोहित शर्मा या विराट कोहली की फैमिली फोटोज पर जाता है।

इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में नहीं खेलेंगे केएल राहुल

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत और इंग्लैंड के बीच 22 जनवरी से पांच मैचों की टी20 सीरीज होनी है। इसके बाद दोनों टीमें तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेंगी। फिर टीम 19 फरवरी से हाइब्रिड मॉडल के तर्ज पर होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेगी।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज गंवाने के बाद भारतीय टीम अब सीमित ओवरों के प्रारूप की तैयारियों में जुट गई है। भारत को इस महीने के अंत में इंग्लैंड के खिलाफ टी20 और वनडे सीरीज खेलनी है जिसके लिए अगले कुछ दिनों में भारतीय टीम घोषित हो सकती है। भारत को अगले महीने चौंपियंस ट्रॉफी में भी हिस्सा लेना है और माना जा रहा है कि इसे देखते हुए केएल राहुल को इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज से आराम दिया जा सकता है।

इंग्लैंड सीरीज के बाद चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेगी टीम

भारत और इंग्लैंड के बीच 22 जनवरी से पांच मैचों की टी20 सीरीज होनी है। इसके बाद दोनों टीमें तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेंगी। फिर टीम 19 फरवरी से हाइब्रिड मॉडल के तर्ज पर होने वाली चौंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेगी। केएल राहुल भले ही इंग्लैंड के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज का हिस्सा ना रहें, लेकिन वह 50 ओवर के प्रारूप में आठ टीमों के बीच होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए उपलब्ध होंगे।

भारत ने चौंपियंस ट्रॉफी के लिए अपनी टीम पाकिस्तान भेजने से इन्कार कर दिया था और भारत अपने सभी मैच दुबई में खेलेगा। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने न्यूज एजेंसी पीटीआई के हवाले से कहा, केएल राहुल ने इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज से ब्रेक मांगा है, लेकिन वह चौंपियंस ट्रॉफी के लिए चयन के लिए उपलब्ध रहेंगे।

राहुल ने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर बनाए थे रन

हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज में भारतीय बल्लेबाजों ने निराशाजनक प्रदर्शन किया था, लेकिन राहुल उन कुछ बल्लेबाजों में से थे जिन्होंने रन बनाए। वह 10 पारियों में 30.66 की औसत से 276 रन बनाकर भारत के लिए तीसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी थे। सीमित ओवरों की टीम में राहुल को जगह बनाने के लिए ऋषभ पंत और संजू सैमसन जैसे विकेटकीपर बल्लेबाज की चुनौती का सामना करना होगा। केएल राहुल ने विजय हजारे ट्रॉफी के लिए कर्नाटक के मैचों से भी आराम मांगा था। कर्नाटक टीम को इस सप्ताह क्वार्टर फाइनल मुकाबले में हिस्सा लेना है। ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद मुख्य कोच गौतम गंभीर ने खिलाड़ियों के घरेलू क्रिकेट में खेलने की इच्छा जताई थी और यह देखना दिलचस्प होगा कि राहुल रणजी ट्रॉफी के अगले दौर के लिए कर्नाटक टीम का हिस्सा होंगे या नहीं।

पूर्व भारतीय बल्लेबाज ने गंभीर पर लगाए आरोप

स्पोर्ट्स डेस्क। तिवारी ने इससे पहले भी गंभीर पर निशाना साधा था और उन्हें पाखंडी कहा था। हालांकि, बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान डेब्यू करने वाले हर्षित राणा और नीतीश राणा गंभीर के समर्थन में उतरे थे। भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाज मनोज तिवारी ने टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर पर एक बार फिर निशाना साधा है और उन पर आरोप लगाए हैं। गंभीर और तिवारी अतीत में साथ खेले हैं। गंभीर और तिवारी आईपीएल के साथ–साथ दिल्ली की घरेलू टीम में भी खेल चुके हैं। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारत को मिली हार के बाद से गंभीर कुछ क्रिकेट विशेषज्ञ और प्रशंसकों के निशाने पर हैं।

आकाश की जगह हर्षित को लेने पर उठाए सवाल

तिवारी ने इससे पहले भी गंभीर पर निशाना साधा था और उन्हें पाखंडी कहा था। हालांकि, बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के दौरान डेब्यू करने वाले हर्षित राणा और नीतीश राणा गंभीर के समर्थन में उतरे थे। तिवारी ने कहा, नीतीश और हर्षित क्यों नहीं गंभीर का समर्थन करेंगे? हर्षित को पर्थ टेस्ट में आकाश दीप की जगह खेलने का मौका मिला, ऐसा कैसे संभव हो सकता है?

आकाश दीप ने क्या गलत किया था? उन्होंने बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के खिलाफ शानदार स्पैल किए थे। एक तेज गेंदबाज के नाते आप मददगार परिस्थितियों में गेंदबाजी करना चाहते हैं, लेकिन आपने आकाश को ही ड्रॉप किया और हर्षित के साथ जाने का फैसला किया जिनके पास प्रथम श्रेणी का इतना अनुभव नहीं था। यह पूरी तरह से पक्षपातपूर्ण चयन था, इसलिए खिलाड़ी सामने आकर गंभीर का समर्थन कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, मैंने कुछ भी गलत नहीं कहा। यह पीआर है जिसके बारे में बात कर रहा हूं। जब कोई तथ्य के आधार पर बात करता है तो लोग समर्थन में आ जाते हैं, लेकिन वे मुझे नहीं जानते हैं, मैं सिर्फ तथ्य पर बात करता हूं।

गांगुली के लिए कहे थे अपशब्द

तिवारी ने गंभीर के साथ अपने पुराने रिश्तों पर भी बात की और कहा कि इस पूर्व बल्लेबाज ने उनके परिवार के लिए अनुचित बातें कही थी और पूर्व कप्तान सौरव गांगुली के लिए भी अपशब्द कहे थे। तिवारी ने कहा, दिल्ली में रणजी ट्रॉफी मैच के दौरान जब गंभीर मुझसे लड़े तो सभी ने उनके एक–एक शब्द सुने थे। चाहे उन्होंने सौरव गांगुली के बारे में बुरा बोला या मेरे परिवार को गाली दी, कुछ लोगों ने फिर भी उनका बचाव किया। खिलाड़ियों को प्लेइंग–11 में शामिल करने का पैमाना सही नहीं है।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।